हिन्दू चेतना (पाक्षिक)
E-mail:hinduchetna.patrika@gmail.com
युगाब्द 5117 | हिन्दवः सोदरा सर्वे, न हिन्दूः पतितो भवेत्। मम दीक्षा हिन्दुरक्षा मम मंत्रः समानता।। | 2072 वि.सं.

अनुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ
श्रीमद्भगवद्गीता	3
दिन दर्शिका	4
स्थितप्रज्ञ श्रद्धेय अशोक जी सिंहल	5
'अशोकजी द्वारा प्रज्ज्वलित प्रेरणा ज्योति प्रत्येक हिन्दू में प्रकाशित होती रहेगी''	7
सामाजिक सन्त के साथ-साथ पारिवारिक व्यक्ति थे अशोक चाचाजी	9
अशोक सिंहल जी का चले जाना	10
अद्वितीय माननीय अशोक जी सिंहल	14
श्रद्धांजलि सभा लुधियाना-पंजाब में परिषद	17
कार्यकर्ता प्रशिक्षण वर्ग	18
प्रकाश पर्व पर निकाली प्रभात फेरी	18
बजरंगियों ने मनाया "शौर्य दिवस"	19
अशोक सिंहल को श्रद्धांजलि देने उमड़ा लखनऊ	20
जम्मू-कश्मीर की पवित्र नदियों में विसर्जित की गई मा0 अशोक सिंघल जी की अस्थियाँ	22
मन्दिर निर्माण के लिए बने संसद में कानून	23
गुरू नानक जयंती व दीप-दीपावली पर यज्ञ तथा विजय महामंत्र का जाप	23
शौर्य दिवस पर दिल्ली में हजारों रामभक्तों ने लिया भव्य मन्दिर का संकल्प	24
बिहार के चुनाव से भारतीय लोकतन्त्र प्रणाली में आवश्यक सुधार की आवश्यकता के संकेत मिले-भारतीय मतदाता संगठन	25

अथनवमोऽध्यायः

त्रैविद्या मां सोमपाः पूतपापा यज्ञैरिष्ट्वा स्वर्गतिं प्रार्थयन्ते।
ते पुण्यमासाद्य सुरेन्द्रलोक मश्नन्ति दिव्यान्दिवि देवभोगान्॥२०॥

वेदत्रयी में विधान किये हुए सकामकर्मों का अनुष्ठान करने वाले, सोमरस को पीनेवाले, एवं पापों से मुक्त हुये मनुष्य जो यज्ञों के द्वारा मेरा पूजन करके स्वर्ग की प्राप्ति के लिये प्रार्थना करते हैं, वे अपने पुण्यों के फलस्वरूप स्वर्गलोक को प्राप्त करके स्वर्ग में देवताओं के दिव्य भोगों को भोगते हैं।

यजुर्साम अरु ऋग्वेदो में-कहे हुये सकाम कर्मों मे जो मनुष्य आस्था दृढ़ रखते-कर्मों का फल स्वर्ग समझते स्वर्ग भोग के प्रबल प्रलोभन-करें जगत सुख से विरक्त मन अनुष्ठान वेदों मे वर्णित-करते श्रद्धा से अति हर्षित करते वे इन्द्र से प्रार्थना-पूजा पुनि स्वर्ग की याजना अतएव स्वर्ग लोक में जाते-भोग समस्त दिव्य वे पाते

दोहा-सोमलता का रस करें, संचित सहित विधान।
वैदिक मंत्रों से करें, अभिमन्त्रित अरु पान।।
स्वर्गारोहण मार्ग में, जो भी बाधक पाश।
उनके केवल पाप वे, ही होते हैं नाश।।

ते तं भुक्त्वा स्वर्गलोकं विशालं क्षीणे पुण्ये मर्त्यलोकं विशन्ति।
एवं त्रयीधर्ममनुप्रप र गतरगतं कामकामा लभन्ते॥२१॥

वे उस विशाल स्वर्गलोक के भोगों को भोगकर पुण्य क्षीण होने पर मृत्युलोक में आ जाते हैं। इस प्रकार स्वर्ग के साधनरूप तीनों वेदों में वर्णित सकाम धर्म का आश्रय लेने वाले और भोगों की कामना करने वाले मनुष्य बारंबार आवागमन के चक्र में पड़ जाते हैं, अर्थात् अपने पुण्य के फलस्वरूप वे स्वर्ग में जाते हैं और पुण्य क्षीण होने पर मृत्युलोक में आते हैं।

वेदत्रयी वर्णित धर्मों के-उनमें विहित विविध कर्मों के जो शुभकर्मी आश्रित रहेत-भोग दिव्य उनको सब मिलते स्वर्ग विशाल आयु भोगादिक-अनुभव दिव्य देह सुख आदिक जिन कर्मों के फलस्वरूप में-वे जाते हैं स्वर्ग लोक में जब वे पुन्य क्षीण हो जाते-मृत्यु लोक में फिर आ जाते पुनः सकाम कर्म वे करते-भोग स्वर्ग सुख पुनः लौटते

दोहा-यदपि शब्द स्पर्श रस, रूप गंध सुख भोग।
परम विलक्षण स्वर्ग में, भूख न प्यास न रोग।।
वेदत्रयी विधि कर्म जो, करें कामना युक्त।
वे नर आवागमन के, च से न हों मुक्त।।

सुगम गीता व्याख्या पुस्तक से
लेखक - **श्री प्यारेलाल त्रिवेदी**
सी-2/53ए, लॉरेंस रोड, केशवपुरम्
दिल्ली-110035, दूर : 011-27192504

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष विक्रम संवत् २०७२
१२ दिसम्बर से २५ दिसम्बर २०१५ ई. तक

सूर्य दक्षिणायन — हेमन्त ऋतु

दिन	तिथि	नक्षत्र	प्रविष्टि सौर मास	दिनांक आंग्लमास	विशेष विवरण
शनिवार	प्रतिपदा	मूल	२७	12	
रविवार	द्वितीया	पूर्वाषाढ़	२८	13	
सोमवार	तृतीया	उत्तराषाढ़	२९	14	
मंगलवार	चतुर्थी	श्रवण	३०	15	
बुधवार	पञ्चमी	धनिष्ठा	१ पौष	16	संक्रान्ति, पंचक प्रारंभ, श्रीराम विवाहोत्सव
गुरुवार	षष्ठी	शतभिषा	२	17	चम्पा षष्ठी
शुक्रवार	सप्तमी	पूर्वाभाद्रपद	३	18	मित्र सप्तमी
शनिवार	अष्टमी	उत्तराभाद्रपद	४	19	
शनिवार	नवमी	00	००	00	क्षय
रविवार	दशमी	रेवती	५	20	पंचक समाप्त 19.45 पर
सोमवार	एकादशी	अश्विनी	६	21	मोक्षदा एकादशी व्रत, श्री गीता जयंती
मंगलवार	द्वादशी	भरणी	७	22	उत्तरायण प्रारंभ, शिशिर ऋतु प्रारंभ
बुधवार	त्रयोदशी	कृतिका	८	23	प्रदोष व्रत, अनंग त्रयोदशी व्रत
गुरुवार	चतुर्दशी	रोहिणी	९	24	श्री दत्तात्रेय जयंती, सत्यनारायण व्रत
शुक्रवार	पूर्णिमा	मृगशिरा	१०	25	त्रिपुर भैरव जयंती

श्री अष्टावक्र गीता (अष्टावक्र उवाच)

अहो चिन्मात्रमेवाहमिन्द्रजालोपमं जगत् ।
अतो मम कथं कुत्र हेयोपादेयकल्पना ॥५॥ ७

"अहो, मैं चैतन्य मात्र हूँ और यह संसार इन्द्रजाल के समान है। इसलिए मेरी हेय और उपादेय की कल्पना कैसे और किसमें हो?"

तदा बधो यदा चित्तं किंचिद्वांछति शोचति ।
किंचिन्मुंचति गृह्णाति किंचित् हृष्यति कुप्यति ॥१॥ ८

"जब मन कुछ चाहता है, कुछ शोक करता है, कुछ त्यागता है, कुछ ग्रहण करता है, कुछ प्रसन्न होता है, कुछ दु:खी होता है, तब बंधन होता है।"

स्थितप्रज्ञ श्रद्धेय अशोक जी सिंहल

-दिनेशचन्द

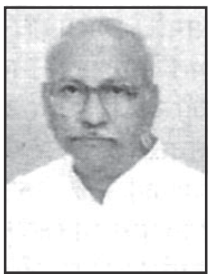

मा. अशोक जी का पैत्रक गांव बिजौली और मेरा गांव छर्रा उ.प्र. के एक ही जिले अलीगढ़ में है। दोनों गांवों के बीच 07 कि.मी. की दूरी है। इस कारण हमारे परिवार के बड़े लोग एक दूसरे को जानते थे तथा घर और गांव में आना-जाना भी था। मा. अशोक जी के पिता श्री महावीर सिंह सिंहल जी का जन्म तो गांव में ही हुआ था; पर वे प्रशासन में आगरा में सेवारत हुए। मा. अशोक जी का जन्म आश्विन कृष्ण पंचमी (27 सितम्बर, 1926) को आगरा में हुआ।

श्री महावीर सिंहल उ.प्र. शासन की सेवा में थे। तत्कालीन उपप्रधानमंत्री सरदार पटेल और उ.प्र. के पहले मुख्यमंत्री श्री गोविन्द वल्लभ पंत से उनके निकट संबंध थे। जिन दिनों उ.प्र. में चौधरी चरणसिंह चकबंदी आदि के मंत्री थे, उन दिनों श्री महावीर सिंहल उनके वित्त सचिव थे। यद्यपि इस पद पर आई.ए.एस. अधिकारी ही रखे जाते थे; परन्तु चौधरी चरणसिंह ने उनकी योग्यता देखकर आई. ए.एस. न होते हुए भी उन्हें यह दायित्व सौंपा।

श्री महावीर सिंहल की रज्जू भैया के पिता कुंवर बलवीर सिंह जी से बहुत निकटता थी। श्री बलवीर सिंह जी भी उ.प्र. शासन में सिंचाई विभाग में मुख्य अभियंता थे। उन्होंने अपने बच्चों की पढ़ाई के लिए प्रयाग में एक मकान बना लिया था। उनके आग्रह पर श्री महावीर सिंहल ने भी भवन बनवा लिया, जिसमें रहकर मा. अशोक जी की पढाई हुई। मान0 अशोक जी के आग्रह पर उनके परिवारजनों ने वह 'महावीर भवन' अब विश्व हिन्दू परिषद के वेद विद्यालय के काम के लिए समर्पित कर दिया है।

प्राय: जो लोग सरकारी सेवा में होते हैं, वे अपने बच्चों को भी इसी दिशा में जाने को प्रेरित करते हैं, परन्तु श्री महावीर सिंहल ने ऐसा नहीं किया। अत: उनके अधिकांश बच्चे उद्योग के क्षेत्र में जाकर सफल कारोबारी बने।

मा. अशोक जी ने प्रयाग और फिर काशी में अपनी शिक्षा पूरी कर 1950 में गोरखपुर के जिला प्रचारक के नाते प्रचारक जीवन प्रारम्भ किया। तत्पश्चात् 1951 में बनारस जिला, 1952 में सहारनपुर, 1958 में देहरादून के जिला प्रचारक रहे। 1959 में वे कानपुर में प्रचारक रहे। आपात्काल के बाद उन्हें दिल्ली में प्रांत प्रचारक बनाया गया। 1982 में उनकी योजना विश्व हिन्दू परिषद में हुई।

मा. अशोक जी जहां भी रहे, वहां उन्होंने जिस काम का निश्चय किया, उसे जिद और दृढ़तापूर्वक पूरा किया। इसके लिए वे उचित सहयोगी अपने साथ जोड़ते रहते थे, तत्पश्चात् परिणाम लाकर ही दिखाते थे। उनका यह स्वभाव बना रहा।

उन्होंने जहां एक ओर प्रतिभाशाली और मेधावी छात्रों को प्रचारक बनाया, वहीं दूसरी ओर समाज के सम्पन्न और प्रभावी लोगों से भी जीवंत संपर्क बनाकर रखा। संघ, विश्व हिन्दू परिषद तथा समाज में चलने वाले अन्य प्रकल्पों के लिए धन की आवश्यकता होने पर उनके ये संबंध बहुत काम आते थे। उन्होंने अपने सब भाई-भतीजों को भी देश, धर्म और समाज के लिए धन देने को सदा प्रोत्साहित किया है। आपात्काल में सब लोग डरे हुए थे; पर ऐसे में भी उनके अनुज (अब स्व.) श्री विवेक जी के घर में गुप्त बैठकें हुआ करती थीं। ऐसी तीन दिन की एक बैठक में मैं भी शामिल हुआ था।

आपात्काल के बाद दिल्ली प्रांत प्रचारक रहते हुए उन्होंने विद्यार्थियों के बीच में सघन काम किया तथा वामपंथियों के गढ़ जे.एन.यू. में भी संघ कार्य खड़ा किया।

दिल्ली का प्रसिद्ध 'झंडेवाला माता मंदिर' एक समय अराजक तत्वों का अड्डा बन गया था। मा0 अशोक जी के प्रयास से वह उनके कब्जे से मुक्त हुआ और अब उसकी सुव्यवस्था की प्रसिद्धि पूरे देश में है। उसके माध्यम से अनेक सेवाकार्य चल रहे हैं।

मा. अशोक जी के भाषण युवकों के दिल में देश और धर्म के लिए समय देने की भावना जगाते थे। दूसरी ओर उनसे दिशा पाकर सैकड़ों प्रौढ़ एवं वानप्रस्थी कार्यकर्ता भी तैयार हुए थे। विश्व हिन्दू परिषद के कार्य विस्तार में इन

दोनों प्रकार के कार्यकर्ताओं का भरपूर योगदान है।

मा. अशोक जी की एक अन्य विशेषता थी कि वे व्यक्तिगत रूप से अपने कार्यकर्ताओं की अत्यधिक चिन्ता करते थे। बृज प्रांत प्रचारक रहते हुए अक्तूबर, 2000 में मुझे 'स्लिप डिस्क' की समस्या हुई। कई तरह से इलाज कराने पर भी वह ठीक नहीं हो सकी। मा. अशोक जी को जब यह पता लगा, तो उन्होंने श्री रवि आनंद के साथ मुझे कोयम्बटूर की आर्य वैद्यशाला में भेजा। उन दिनों वैद्यशाला में कोई कमरा खाली नहीं था। आर्य वैद्यशाला के प्रमुख श्री कृष्णकुमार वाडियार विदेश गये हुए थे। अशोक जी ने उनसे वहीं बात की और फिर उनके घर के एक कमरे में ही रहते हुए मेरी तैल चिकित्सा हुई, जिससे मैं ठीक हो सका।

मा. अशोक जी का परिवार पूर्णत: धार्मिक परिवार रहा है। अत: वहां साधु संतों का आवागमन होता रहता था। इसी से उनके मन में ईश्वर और संतों के प्रति अटल विश्वास जाग्रत हुआ, जो अंत तक दृढ़ रहा। मा. अशोक जी संतों की बात कभी टालते नहीं थे। इसी प्रकार उनकी बात भी किसी संत ने टाली हो, ऐसा देखने में नहीं आया। पूज्य संत अशोक जी का बहुत सम्मान करते थे।

एक पूज्य शंकराचार्य जी ने तो सार्वजनिक रूप से एक सभा में यह कहा था कि हमारे जैसे संतों का मूल काम समाज का प्रबोधन है। उसके लिए हमें मठ-मंदिरों से निकालने का श्रेय अशोक जी को है। पांच वर्ष पूर्व नागपुर के पास उदासा में विश्व हिन्दू परिषद के पूर्णकालिक कार्यकर्ताओं का तीन दिवसीय प्रशिक्षण वर्ग था। उसमें पूज्य गोविन्द गिरि जी महाराज भी आये थे। जब अशोक जी उनके गले में पुष्पहार डालने और पैर छूने को आगे बढ़े, तो पूज्य गोविन्द गिरि जी ने उनके हाथ पकड़ लिये। उन्होंने बहुत प्रयास के बाद भी अशोक जी को अपने पैर नहीं छूने दिये।

भारतवर्ष तथा विश्व में विहिप के वर्तमान विश्वव्यापी स्वरूप का पूरा श्रेय मान. अशोक जी को जाता है तथा उन्होंने हिन्दू समाज का जनजागरण एवं हिन्दू समाज के स्वाभिमान को जगाने का बहुत बड़ा कार्य किया है। वे हिन्दू समाज के मानबिन्दु, श्रद्धाबिन्दु एवं जीवनमूल्यों के प्रति पूर्ण समर्पित रहे। गौ, गंगा, गीता, वेद तथा श्रीराम जन्मभूमि, श्रीकृष्ण जन्मभूमि, बाबा काशी विश्वनाथ को मुक्त कराने आदि में उनकी अग्रणी भूमिका सदैव याद की जाएगी। जय श्रीराम का घोष हिन्दू समाज में सहज लिया जाता है परन्तु जय श्रीराम के इस घोष बोलने में वीरत्व का भाव मान. अशोक जी ने भरा।

केवल संत ही नहीं, अपितु समाज के अन्य बड़े और प्रतिष्ठित लोगों के मन में भी अशोक जी के प्रति बहुत सम्मान रहा। 30 मई, 2013 को महामहिम राष्ट्रपति श्री प्रणव मुखर्जी से संतों के प्रतिनिधिमंडल की भेंट का कार्यक्रम था। उद्देश्य था-उन्हें श्रीराम जन्मभूमि मंदिर के बारे में केन्द्र सरकार द्वारा न्यायालय में दिये गये शपथपत्र की याद दिलाना। राष्ट्रपति सचिवालय से कहा गया कि मिलने वालों की संख्या आठ से अधिक न हो। अत: सात प्रमुख संतों के साथ वि.हि.प. के महामंत्री श्री चम्पतराय के नाम वहां भेज दिये गये। जब यह सूची महामहिम मा. मुखर्जी ने देखी, तो उन्होंने कहा कि इसमें श्री अशोक सिंहल का नाम क्यों नहीं है, उन्हें भी अवश्य आना है। अत: आठ संख्या की मर्यादा होते हुए भी श्री मान. अशोक जी वहां बुलाए गये। महामहिम राष्ट्रपति महोदय से सबका परिचय कराया गया। जब मान. अशोक जी का नाम आया, तो महामहिम श्री मुखर्जी ने कहा, इन्हें सब जानते हैं, इनका परिचय कराने की आवश्यकता नहीं है।

इसी प्रकार 17 अगस्त, 2013 को लखनऊ में मुख्यमंत्री श्री अखिलेश यादव और उनके पिता श्री मुलायम सिंह से अयोध्या के संत मिलने गये थे। इसका उद्देश्य उन्हें 25 अगस्त से होने वाली अयोध्या की 84 कोसी परिक्रमा की जानकारी देना था। इस प्रतिनिधिमंडल में संतों के साथ मा. अशोक जी और श्री चम्पत जी भी थे। मुलायम सिंह ने बड़े आदर से सबका स्वागत किया। यद्यपि अपनी राजनीतिक मजबूरियों के चलते भेंट के अगले ही दिन उन्होंने यात्रा को प्रतिबंधित भी कर दिया।

मा. अशोक जी प्रत्येक परिस्थिति में धैर्य बनाये रखते थे। ऐसी स्थितप्रज्ञता प्राय: दुर्लभ है। 17 अगस्त, 2013 को दिन में 11 बजे लखनऊ में मुलायम सिंह और अखिलेश यादव से भेंट निर्धारित थी। 10.30 पर उन्हें अपने अनुज श्री विवेक जी की मृत्यु का समाचार मिला।

शेष पृष्ठ 8 पर....

'अशोकजी द्वारा प्रज्ज्वलित प्रेरणा ज्योति प्रत्येक हिन्दू में प्रकाशित होती रहेगी''

-डॉ. प्रवीण तोगड़िया

जब अशोक जी ने मेरे कंधे पर हाथ रखकर कहा, हम सब मिलकर भव्य राम मंदिर बनाएंगे, हम सब मिलकर हिन्दू राष्ट्र का पुनरुत्थान करेंगे, तब मैं 36 वर्ष का था। 1992 में अयोध्या, गुजरात से विश्व हिन्दू परिषद के युवाओं के साथ गया था। अशोक जी के हाथ में ताकत थी, आत्मविश्वास उनकी आंखों में झलक रहा था। तब वे 66 वर्ष के थे। इसके कई वर्ष पहले से 10 वर्ष की आयु में ही मैं रा.स्व.संघ से जुड़ गया था। मैं ही नहीं, लाखों युवाओं को प्रेरणा देकर अशोक जी ने मां भारती की, हिन्दुओं की सेवा में तत्पर किया।

भगवान श्रीराम का भव्य मंदिर अयोध्या में रामजी के जन्म स्थान पर ही बने, यह उनका केवल स्वप्न नहीं था, यह उनका अदम्य विश्वास था, उनके जीवन की अटूट प्रतिबद्धता थी। दिन-रात उसी पर अशोक जी कार्य करते रहते थे। संघ के प्रचारक, स्वयंसेवक संगठनात्मक कुशलता सीखते हैं और कार्य, आंदोलन, सेवा इन सभी में नियोजन और अनुशासन ये सभी ऐसे व्यक्तित्व का अविभाज्य अंग होते हैं। अशोक जी भी ऐसे ही थे। आजकल ही नहीं, तब भी, जब टीवी, इंटरनेट, सोशल मीडिया का चलन नहीं था, यही होता था कि किसी बड़े कार्य करने वाले व्यक्तियों के विषय में संकुचित, अधूरी जानकारी के आधार पर या सरकारी दबाव में सकारात्मक कम और उलटी-पुल्टी खबरें चलाकर उनकी छवि मलिन करने का काम चलता ही रहता था। अशोक जी इस सबसे कभी प्रभावित नहीं हुए। राम मंदिर के अतिरिक्त अशोक जी ने कई महान कार्य इस देश के लिए किये।

''धर्म संसद'' की अनोखी संकल्पना अशोक जी ने विकसित की। देश-विदेश के साधु-संतों को राष्ट्र कल्याण और हिन्दू राष्ट्र के एक समर्थ सूत्र में एक करना कोई आसान काम नहीं था। अशोक जी ने धर्म संसद खड़ी की। आगे उसकी व्याप्ति और महत्व ऐसा बढ़ता गया कि अनेक विषयों पर धर्म संसद का एक शब्द, एक प्रस्ताव आदेशयुक्त दिशा का स्वरूप लेने लगा। अशोक जी ने

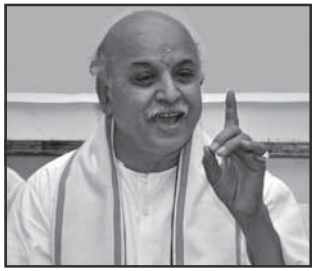

एक बार मुझे कहा, इंग्लैंड में प्रधानमंत्री, अमरीका में राष्ट्राध्यक्ष जब शपथ लेते हैं तब 'गॉड' के नाम पर लेते हैं और उस समय उनके पेरिस के फादर मंच पर या उनके साथ पोडियम के निकट उपस्थित होते हैं। फिर भी विश्व में ये देश 'सेकुलर' कहलाते हैं। कभी हमारे देश में ऐसा होगा कि हमारा धर्म इस देश की राजनीति की दिशा तय करेगा और जब देश के प्रमुख शपथ लेंगे तब हमारे धर्म के प्रमुख उसी सम्मान से उनके साथ आशीर्वाद देते हुए होंगे? ऐसा होगा ही। उनकी यही अदम्य आशा उनके लिए और इस देश के हिन्दुओं के लिए प्रेरणास्रोत थी।

सरकार ने जब रामेश्वरम् में रामसेतु तोड़ने का प्रकल्प घोषित किया, तब अशोक जी को धक्का लगा था कि ऐसी दुष्टतापूर्ण योजना कोई बना ही कैसे सकता है। संघ के मार्गदर्शन में तब विश्व हिन्दू परिषद ने रामेश्वरम् में रामसेतु बचाने का देशव्यापी आंदोलन चलाया। सरकार को निर्णय बदलना पड़ा। उस शांतिपूर्ण आंदोलन के दौरान कई राज्य सरकारों ने पुलिस द्वारा कार्यकर्ताओं पर निर्मम लाठियां चलवायीं। इस कारण अशोक जी सरकारों पर बहुत कुपित हुए थे। अशोक जी अपने विचारों पर कायम रहते थे और मनोबल बढ़ाते रहते थे। एक बुद्धिमान अभियंता का, जो जाने माने व्यवसायी परिवार से हो, उस समय देश के लिए सब कुछ त्यागकर निकलना, विशेषकर जब वे युवा थे, कोई आसान काम नहीं था। अशोक जी का दृढ़संकल्प उनकी शक्ति थी जो आगे जाकर विश्व हिन्दू परिषद की प्रेरणा बनी। उनके कहने से दो-ढाई दशक पहले जब मैं अपनी अच्छी खासी कैंसर सर्जरी की प्रैक्टिस और परिवार-घर-अस्पताल छोड़कर निकला, तब मेरा पुत्र केवल 7 वर्ष का था। ऐसे अनेक युवाओं को अशोक जी ने प्रेरणा दी थी।

सामाजिक समरसता से ही देश आगे बढ़ेगा यह अशोक जी का विश्वास था। छुआछूत मुक्त भारत का जो स्वप्न गुरु गोलवलकर जी, स्वामी चिन्मयानंद जी, श्री आप्टे जी आदि ने देखकर विश्व हिन्दू परिषद की स्थापना 1964 में की थी, उस स्वप्न को पूर्ण करने हेतु अशोक जी ने कई मंदिरों में सभी जातियों के प्रवेश का अभियान चलाया। उस समय यह बहुत कठिन था, लेकिन अनेक गांवों में जाकर अनेक लोगों से मिलना, बात करना ऐसे सभी अथक प्रयास अशोक जी करते रहे।

1995 में कश्मीर में अलगाववादियों ने अमरनाथ यात्रा बंद करने की धमकी दी। अशोक जी के नेतृत्व में विश्व हिन्दू परिषद ने उस दहशत का मुकाबला किया। 1992 के राम मंदिर आंदोलन के पश्चात् जब केंद्र में नयी सरकार आयी, तब अशोक जी आनंदित थे। उनके जीवन का स्वप्न पूर्ण होगा, अयोध्या में भव्य राम मंदिर बनेगा ऐसी आशा लेकर उन्होंने देशभर में प्रवास किया। उसके पश्चात् जो हुआ ही नहीं उसके लिए उनके मन में दु:ख था, लेकिन वे कभी हारे नहीं। सभी का मनोबल बनाकर रखा और 2 वर्ष पहले उनकी वही आशा फिर से जग गयी। उनकी वृद्ध आंखों में आशा की एक उज्ज्वल किरण चमकी और उस ऊर्जा ने उनके व्याधिग्रस्त वृद्ध शरीर में भी शक्ति भर दी। फिर से देशभर में प्रवास कर उन्होंने नयी सरकार बने इस पर काम किया। जब नयी सरकार बन गयी, तब अनेक हिन्दुओं के साथ अशोक जी की भी वही अदम्य आशा जग गयी कि अब अयोध्या में राम जन्मभूमि पर भव्य मंदिर अवश्य बनेगा। इसी आशा से आज भी उनका हृदय सभी हिन्दुओं में धड़कता होगा। राह देखना अदम्य आशा का स्वभाव होता है। इस प्रयास में निराशा के झटके भी लगते हैं, किन्तु हम सभी का उत्तरदायित्व है कि अशोक जी का वह जीवनस्वप्न पूर्ण करें।

हमारे करने के लिए अनेक कार्य हैं। समाज में करोड़ों बच्चे, परिवार अच्छे स्वास्थ्य और शिक्षा से वंचित हैं, उन्हें सुविधाएं प्राप्त करवाना संस्कार और संस्कृत एवं वेद का सुलभ भाषा में प्रसार प्रचार करना इत्यादि। अशोक जी ने गोवंश बचाने हेतु देशभर में गोरथ आयोजित किये थे-उनका कार्य आगे ले जाना होगा। अविरल निर्मल गंगा हेतु एक दशक पहले ही अशोक जी के नेतृत्व में विश्व हिन्दू परिषद ने काशी से गंगा सागर तक यात्रा निकाली थी जिसमें गंगा किनारे बसे गांवों के लोगों को गंगाजी को निर्मल रखने के उपाय समझाए गए थे। यह कार्य भी आज हम सभी की राह देख रहा है। युवाओं को जोड़ने हेतु आरम्भ हुए बजरंगदल और दुर्गावाहिनी पर भी आज दायित्व है कि सभी कार्यों को आगे ले जाएं।

अशोक जी का शरीर आज भले हमारे बीच में नहीं है, लेकिन उनके द्वारा जलायी गई प्रेरणा की ज्योति उनके जैसी अदम्य आशा लेकर हर हिन्दू में प्रकाशित होती रहेगी। 2020 में जब विश्व हिन्दू परिषद 75वीं वर्षगांठ मनाएगी, तब उनके सभी स्वप्न पूर्ण कर कई वर्ष आगे चल पड़ी होगी विश्व हिन्दू परिषद। चलें, हम सभी के प्रेरणा-गुरु अशोक जी को साष्टांग प्रणाम कर धर्मपथ पर आगे बढें।

लेखक विश्व हिन्दू परिषद के अन्तरराष्ट्रीय कार्याध्यक्ष हैं। ❑

....पृष्ठ 6 का शेष

उस समय वे प्रतिनिधिमंडल में जाने वाले पूज्य संतों से बात कर रहे थे। बिना विचलित हुए उन्होंने वार्ता पूरी की और मुलायम सिंह से मिलने भी गये। इसके बाद ही उन्होंने दिल्ली को प्रस्थान किया।

बिगड़े स्वास्थ्य के बावजूद अपने सहयोगियों का परिचय कराने वे एक मास के विदेश दौरे पर गए, यह जिद की पराकाष्ठा नहीं तो और क्या है?

हिन्दू समाज के ऐसे श्रेष्ठ और ज्येष्ठ मार्गदर्शक स्व. अशोक जी का जीवन हमें सदैव प्रेरणा देता रहेगा। उनके जाने से हुई अपूरणीय क्षति को पूज्य संतों के आशीर्वाद व मार्गदर्शन से उनके द्वारा तैयार किए गए देवदुर्लभ परिषद कार्यकर्ता सामूहिक रूप से मिलकर पूरी कर सकने में समर्थ हो सकें, यही प्रभु से कामना है।

प्रभु श्रीराम से प्रार्थना है कि वे ऐसी दिव्य विभूति/आत्मा को अपने श्रीचरणों में स्थान प्रदान करें।

लेखक विश्व हिन्दू परिषद के अन्तरराष्ट्रीय संगठन महामंत्री हैं। ❑

सामाजिक सन्त के साथ-साथ पारिवारिक व्यक्ति थे अशोक चाचाजी

-सलिल सिंहल

श्रद्धांजलि सभा में श्रद्धेय अशोकजी सिंहल के परिजन

जब मुझे आदरणीय अशोक चाचाजी के बारे में विहिप द्वारा लिखने के लिए कहा गया तो मैं समझ नहीं पाया कि उस व्यक्ति के बारे में क्या लिखूं, जिसकी पूरी जिन्दगी उनके सम्पर्क में आने वाले हजारों लाखों लोगों के लिए एक खुली किताब जैसी रही हो। जो भी व्यक्ति उनके सम्पर्क में आया वह उनके अदम्य साहस, दृढ़ विश्वास तथा अत्यन्त विनम्रता से प्रभावित हुए बगैर नहीं रहा।

वे किसी मठ के संत तो नहीं थे, लेकिन एक ऐसे उत्तुंग संत पुरुष अवश्य थे जिन्होंने एक ऐसा आन्दोलन शुरु किया, जिसकी गहराई तथा प्रभाव महात्मा गांधी के नेतृत्व में चले देश के स्वतंत्रता संग्राम से कम नहीं था। उन्होंने अत्यन्त सादा जीवन व्यतीत किया। उनके दैनंदिन जीवन की सभी आवश्यक वस्तुएं उस एक थैले में रहती थी, जिसे वे जहां भी जाते हमेशा अपने साथ रखते। उनकी सबसे पूंजी था वह प्यार, स्नेह और सम्मान जो उन्हें समस्त भारत ही नहीं, दुनिया भर में बसे लाखों करोड़ों भारतीयों की ओर से मिला।

उनकी दुनिया में झांकने का अवसर मुझे 17 एवं 18 नवम्बर, 2015 को उस समय मिला जब वे इस नश्वर देह को त्यागकर निज धाम को प्रस्थान कर गए। उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए अरबपति लोग, मंत्री, मुख्यमंत्री, प्रधानमंत्री, सरकारी अधिकारी, साधु, संत, गरीब, अमीर और यहां तक कि व्हील चेयर पर बैठे लोग भी पहुंचे। अधिकतम की आंखों में आंसू थे। इतनी श्रद्धा एवं सम्मान बहुत कम लोगों को मिलता है। श्रद्धांजलि देने वालों की पंक्ति कम होने का नाम ही नहीं ले रही थी। इसके अलावा हजारों लोग करीब 12 किमी पैदल चलकर निगम बोध घाट उन्हें अपनी अन्तिम आदरांजलि देने पहुंचे। उनके चेहरे से साफ झलक रहा था कि मानो उनके अपने परिवार से कोई चला गया हो।

विशाल सिंहल परिवार में हमें शायद कोई खुशी अथवा गमी का ऐसा पारिवारिक प्रसंग याद नहीं है जब अपनी तमाम व्यस्तताओं के बावजूद चाचाजी उसमें शामिल न हुए हों। वे एक सामाजिक संत होते हुए भी एक पारिवारिक व्यक्ति थे और जब कभी कोई बड़ी समस्या उत्पन्न होती थी, हम उनसे मार्गदर्शन प्राप्त करते थे। उन्होंने अपने अंतिम समय तक अत्यन्त समर्पण भाव से अपना जीवन जिया। इसीलिए आधुनिक भारत के करोड़ों लोगों के दिलों में उन्हें स्थान मिला।

अशोक चाचाजी ने हमारे परिवार को वेद पाठ के लिए प्रेरित किया। उन्हीं की प्रेरणा से हमारे परिवार में पहली बार 1963 में उदयपुर में और उसके बाद अप्रैल 2015 में चारों वेदों का पाठ और हवन हुआ। कुछ वेद पंडितों ने बताया कि 1963 में सम्भवत: भारत में हमारा पहला परिवार था जिसने चारों वेदों के लिए इस प्रकार का कार्यक्रम आयोजित किया। उन कार्यक्रमों में आदरणीय चाचाजी उपस्थित हुए। उन्हीं के माध्यम से हमें चारों वेदों का आशीर्वाद प्राप्त हो सका।

व्यक्तिगत दृष्टि से मुझे आज लगता है कि भगवान ने मुझे उनके परिवार का हिस्सा बनाकर मुझ पर बड़ी कृपा की है। हमारा पूरा परिवार उन्हें सादर प्रणाम करता है।

(ज्येष्ठ भतीजा)
sls@piind.com

अशोक सिंहल जी का चले जाना

-डॉ. कुलदीप चन्द अग्निहोत्री

विश्व हिन्दू परिषद के मार्गदर्शक अशोक सिंहल जी का 17 नवम्वर 2015 को दोपहर में दिल्ली के पास गुड़गाँव में देहान्त हो गया। उनका जन्म 27 सितम्बर 1926 को हुआ था। कुछ दिन पहले ही देशभर में उनका जन्म दिन मनाया गया था। उन्होंने जीवन के 89 वर्ष पूरे कर लिये थे और 90 में प्रवेश किया था। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के अभियांत्रिक स्नातक अशोक जी प्रशिक्षण से धातु विज्ञानी थे। इलाहाबाद के सम्पन्न परिवार के अशोक जी ने कुछ वर्ष पहले करोड़ों की अपनी पैतृक सम्पत्ति दान कर एक न्यास बना दिया था। महर्षि वशिष्ठ के नाम से बनाये गये इस न्यास के नाम के आगे वशिष्ठ ऋषि की अर्धांगनि का नाम जोड़ कर इसका पूरा नाम अरुन्धति वशिष्ठ अनुसन्धान पीठ रखा। पीठ का मुख्य उद्देष्य दीनदयाल उपाध्याय के एकात्म मानव दर्शन पर शोध कार्य करना है। जिस प्रकार महात्मा गान्धी मानते थे कि भारत का विकास हिन्द स्वराज के आधार पर ही हो सकता है, पश्चिमी अवधारणाओं पर किया गया विकास भारत को भारत ही नहीं रहने देगा, उसी प्रकार अशोक सिंहल जी मानते थे कि विकास की सही दिशा उपाध्याय का एकात्म मानव दर्शन ही हो सकता है। यही दर्शन भारतीय स्वभाव और प्रगति के अनुकूल है। गान्धी का **हिन्द स्वराज** और उपाध्याय का **मानव दर्शन** मोटे तौर पर एक ही धरातल पर अवस्थित हैं।

अशोक जी की धातु प्राद्यौगिकी से लेकर एकात्म मानव दर्शन तक पहुँच पाने की यात्रा बहुत लम्बी है। 1926 में उनकी यह जीवन यात्रा आगरा से शुरु हुई थी। वही आगरा जिसने इतिहास के न जाने कितने उतार चढ़ाव अपने जीवन काल में देखे। इसी आगरा से निकले अशोक सिंहल ने स्वयं भी भारतीय इतिहास पर अपना एक स्थायी पद चिन्ह छोड़ दिया। अशोक जी के निकटवर्ती विजय कुमार के अनुसार नौवीं कक्षा में पढ़ते हुये उन्होंने स्वामी दयानन्द की जीवनी पढ़ ली थी। जाहिर है इस जीवनी ने बाद में अशोक जी को कभी चैन से नहीं बैठने दिया। लेकिन सभी जानते हैं कि शुरुआत चाहे आगरा से हो या किसी और स्थान से, भारत को अपने भीतर आत्मसात करने का रास्ता प्रयागराज से होता हुआ काशी जी में जाकर ही रुकता है। 1942 में

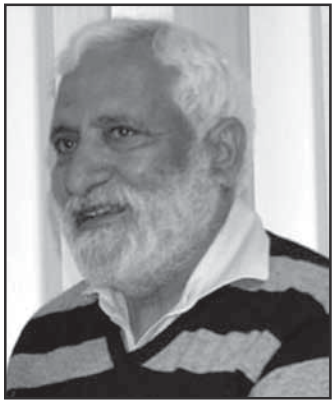

अशोक जी भी प्रयागराज इलाहाबाद में ही अध्ययन कर रहे थे। इलाहाबाद उबल रहा था। आनन्द भवन कांग्रेस की गतिविधियों का केन्द्र था। महात्मा गान्धी ने अंग्रेजों को भारत छोड़ने का अल्टीमेटम दे दिया था। सत्याग्रह हो रहा था। उधर द्वितीय विश्व युद्ध की ज्वालाओं में यूरोप दग्ध हो रहा था। बाबा साहिब आम्बेडकर कौंसिल के सदस्य होकर भारत में से अस्पृश्यता उन्मूलन के रास्ते तलाश रहे थे। गान्धी जी गिरफ्तार हो चुके थे। देश में निराशा का वातावरण छाने लगा था। अशोक सिंहल जी की उम्र उस समय सोलह साल की थी। वे संगम तट पर खड़े होकर, यह कल कल छल छल बहती-क्या कहती गंगाधारा, को समझने का प्रयास कर रहे थे। वे जानते थे, यह गंगाधारा ही अनन्त काल से भारत की आवाज है। वहीं उनकी भेंट प्रो. राजेन्द्र सिंह (जो बाद में रज्जु भैया के नाम से जाने गये) से हुई जिन्होंने गंगा की कल कल ध्वनियों की व्याख्या किशोर अशोक को समझाई। भारत माँ को विश्व गुरु के आसन पर स्थापित करने की ध्वनि। विदेशी दासता से मुक्त करवाने की गुहार। अशोक जी उसी उम्र में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से जुड़ गये थे। लेकिन संघ से सोलह वर्ष के उस किशोर के लिये जुड़ना उस समय भी इतना आसान नहीं था। प्रो. राजेन्द्र सिंह को बाकायदा परिवार में बुलाया गया और उनसे संघ की प्रार्थना सुनी गई। नमस्ते सदा वत्सले मातृभूमे। प्रार्थना सुन

कर अशोक जी के माता जी की संतुष्टि हुई। यही देश की मुक्ति का रास्ता है। सिंहल जी ने शाखा जाना शुरु कर दिया। उसके बाद उन्होंने कभी पीछे मुड़ कर नहीं देखा। कभी घर की तरफ भी नहीं।

प्रयागराज से ही अशोक जी काशी गये। महामना मालवीय जी के काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में धातु विज्ञान की पढ़ाई करने के लिये। यहीं उन्होंने मनुष्यों के भीतर भी ऐसी धातु निर्माण का मंत्र सीखा जिसके चलते कोई अपना सर्वस्व भारत माता के चरणों में अर्पित कर देता है। सबसे पहले उन्होंने यह ताकत अपने भीतर ही पैदा की। गंगा के चौरासी घाटों पर गंगा को निहारते हुये, काशी विश्वनाथ मंदिर के घंटानाद को सुनते हुये, महामना की प्रयोगस्थली में घूमते हुये, उन्होंने अपने भीतर को फौलादी बना लिया। बी.ई की पढ़ाई बीच में ही छोड़ कर वे 1948 में जेल चले गये। पंडित नेहरु ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ पर प्रतिबन्ध लगा दिया था। जेल से छूटने के बाद ही उन्होंने अपनी बी.ई की पढ़ाई पूरी कर डिग्री हासिल की। लेकिन इसके साथ-साथ उन्हेंने संघ की पढ़ाई भी पूरी कर ली थी। यही कारण है कि इंजीनियर बनने के बाद वे वापिस घर नहीं गये बल्कि संघ के प्रचारक बन गये।

लगभग आठ सौ साल की गुलामी के कारण भारतीय इतिहास पुरुष के शरीर पर पड़ गये काले धब्बे अशोक जी की चिन्ता का कारण थे। यह चिन्ता तो देश में और अनेक चिन्तकों को भी है। लेकिन अशोक जी चिन्तन और यथार्थ के अन्तराल को कर्म से पाटने वाले वीरव्रती थे। यही कारण है कि काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से धातु विज्ञान में पढ़ाई करने के वाद भी सांसारिक झमेलों से किनारा करते हुये वे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रचारक बन गये थे। अशोक जी की यही चिन्ता उन्हें बार-बार अयोध्या की ओर खींच कर ले जाती थी। विदेशी आक्रमणकारियों ने अयोध्या में राम स्मृति मंदिर को ध्वस्त कर उसके स्थान पर बाबर की स्मृति में एक ढाँचा खड़ा कर दिया था। भारत के लोगों को आशा थी कि जिस प्रकार यूरोपीय विदेशी शासकों के भारत से चले जाने के बाद सरकार ने उन शासकों के बुत और अन्य चिह्न सार्वजनिक स्थानों से हटा दिये थे, उसी प्रकार मंगोल, तुर्क, अफगान व अरब शासकों के चिह्न भी हटा दिये जायेंगे। सरदार पटेल ने सोमनाथ मंदिर के पुनर्निर्माण से उसकी शुरुआत भी की थी, लेकिन उनकी मृत्यु के बाद वह कार्य वहीं स्थगित हो गया। सरदार पटेल के उसी कार्य को आगे बढ़ाने का प्रश्न था। अयोध्या में बने बाबरी ढाँचे को लेकर अशोक जी की चिन्ता भी यही थी। बहुत से लोग अज्ञानतावश यह मानते हैं कि वे मुसलमानों के विरोधी थे, इसलिये बाबरी ढाँचा हटाना चाहते थे। लेकिन इस का लेशमात्र भी सत्य नहीं है। मुझे अशोक जी का सान्निध्य पिछले लगभग पन्द्रह बीस सालों से मिलता रहा है। दरअसल वे तो आश्चर्य व्यक्त किया करते थे कि भारत के मुसलमानों का बाबर से क्या सम्बंध है? ये मुसलमान तो अपने ही बन्धु हैं जो विदेशी इस्लामी सत्ता के दिनों में किन्हीं कारणों से मतान्तरित हो गये। इनका बाबर से क्या लेना देना है। अशोक जी का कहना था कि इन लोगों को कुछ निहित स्वार्थी तत्व अपने राजनैतिक ना नुकघ्सान से भड़काते रहते हैं। बाबर मध्य एशिया से आया विदेशी

आक्रमणकारी था। जिसने भारत के इस खंड को जीत ही नहीं लिया था बल्कि यहाँ के लोगों पर अमानुषिक अत्याचार किये थे। धीर-धीरे देश में बाबर के वंशजों का राज्य फैलता गया। मतान्तरण उसी कालखण्ड के अत्याचारों का परिणाम है। लेकिन उस कालखंड में भी भारत के लोग निरन्तर संघर्षशील रहे। आज जिन भारतीयों ने इस्लाम मजहब को अँगीकार कर लिया है, उन्हीं के पूर्वज इन विदेशी इस्लामी आक्रमणकारियों के अत्याचारों का सर्वाधिक शिकार हुये थे। भारत के मुसलमानों का न तो मध्य एशिया से और न ही बाबर से कोई ताल्लुक है, बल्कि इन के पूर्वज तो बाबर और उनके वंशजों के अत्याचारों का शिकार हुये। इसीलिये अयोध्या का प्रश्न राष्ट्रीय प्रश्न है, उसका मजहब से कुछ लेना देना नहीं है। यह सभी भारतीयों के सम्मान का प्रश्न है, चाहे वे इस्लाम मजहब को मानते हों, वैष्णव सम्प्रदाय के हों, या शैव मत के, जैन मताबलम्बी हों या बौद्ध पंथ के अनुरागी हों। सिक्ख पंथ के उपासक हों या नास्तिक ही क्यों न हों। क्योंकि राम सभी के यशस्वी पूर्वज थे। कभी अल्लामा इकबाल ने सभी भारतीयों की तरफ से राम की महत्ता का जिक्र करते हुये लिखा था -

है राम के वुजूद पे हिन्दोस्तां को नाज
अहले नजर समझते हैं उसको इमाम ए हिन्द

अशोक जी इसी राम के वुजूद की निशानियों को समेट रहे थे, जिनको नष्ट कर दिया गया था या करने के प्रयास हो रहे थे। एक समय ऐसा भी आया जब राम के वुजूद की दूसरी निशानी राम सेतु को तोड़ने की लगभग सब तैयारियाँ पूरी कर ली गई थीं। यदि उस समय अशोक जी के नेतृत्व में विश्व हिन्दू परिषद सक्रिय न होती तो सचमुच राम सेतु का वुजूद समाप्त हो जाता। लेकिन इन सभी प्रयासों में मुस्लिम विरोध कहीं दूर दूर तक नहीं था। यही कारण था कि अशोक जी प्रयास कर रहे थे कि अयोध्या में वर्तमान राम मंदिर का विस्तार कर भव्य राम मंदिर सर्वानुमति से बने। संसद इसके लिये प्रस्ताव पारित करे। इसी हेतु वे समाज के सभी वर्गों से मिलते थे। देह शान्त हो जाने से पूर्व भी उन्होंने यही कहा कि अभी भव्य राम मंदिर का निर्माण करना है, ऐसा समाचार पत्रों में छपा भी था। अयोध्या में राम मंदिर तो अशोक जी ने बना दिया था। अब तो केवल उसका स्वरुप युगानुकूल भव्य बनाना है।

लेकिन राम मंदिर आन्दोलन तो बहुत बाद की बात है। संघ की दृष्टि से उनका लम्बा कार्यकाल कानपुर का ही रहा। आपात् काल में देश पर लाद दी गई सांविधानिक तानाशाही के खिलाफ नानाजी देशमुख के नेतृत्व में देश भर में आन्दोलन चला तो उसमें अशोक जी भी अग्रणी पंक्तियों में थे। पुलिस ने उन्हें पकड़ने के भरसक प्रयास किये लेकिन भूमिगत हो गये अशोक जी की छाया को भी वे पकड़ नहीं पाये। अशोक जी से प्रेरणा लेकर न जाने कितनें युवकों ने जेल जाना स्वीकार कर लिया अपने व्यवसाय और कैरियर को ठोकर मार कर। आपात काल में देशवासियों द्वारा किये गये संघर्ष की भट्टी में से तप कर निकले अशोक जी दिल्ली में प्रान्त प्रचारक बन कर आये। उधर सायं प्रचारक का दायित्व इन्द्रेश कुमार जी ने संभाला। इन दोनों की योजना से ही दिल्ली का ऐतिहासिक तीर्थस्थान झंडेवाला मंदिर किसी की निजी सम्पत्ति न रह कर सार्वजनिक न्यास के रुप में विकसित हो सका। 1981 में अशोक जी ने विश्व हिन्दू परिषद की जिम्मेदारी सँभाली। उन जिनों विश्व हिन्दू परिषद सीमित क्षेत्रों में ही जाना जाता था। उसका कार्यक्षेत्र विस्तृत होते हुये भी, काम सीमित ही था। अशोक जी ने इसे व्यापक फलक प्रदान किया। कार्यों का विस्तार किया। मीनाक्षीपुरम में हुये मतान्तरण ने उन्हें कहीं भीतर तक हिला कर रख दिया। जाति के आधार पर सामाजिक स्थान और नियति का निर्धारण! उन्होंने हिन्दू समाज के भीतर अस्पृश्यता विरोधी व ऊँच-नीच विरोधी आन्दोलन को और गतिशील बनाया। सामाजिक समरसता परिषद का नारा बन गया। बाबा साहेब आम्बेडकर आयु पर्यन्त इस कार्य में लगे रहे थे। उन्होंने अनेक स्थानों पर जाति की जड़ता की चट्टानों को हिला कर रख दिया था। लेकिन इन चट्टानों को तोड़ने का काम अभी बाकघी था। अशोक सिंहल ने यही काम शुरु किया। मंगल काल में अनेक बन्धु अनेक कारणों से हिन्दू समाज को त्याग कर इस्लाम में दीक्षित हो गये थे। कालान्तर में वे उनकी सन्तानें राष्ट्र विरोधी धरातल पर जा

खड़ी हुईं। मतान्तरण से राष्ट्रन्तरण होता है। लेकिन शिक्षा के प्रभाव के कारण ऐसे अनेक बन्धु, खसस कर युवा पीढ़ी पुनः अपने घर वापिस आ जाना चाहती थी। विश्व हिन्दू परिषद ने परावर्तन आन्दोलन शुरु किया। यह एक प्रकार से स्वामी दयानन्द द्वारा चलाये गये शुद्धि आन्दोलन का ही विस्तार था। इसी परावर्तन से आगे जाकर धर्म जागरण का आन्दोलन फैला। धर्म जागरण ने गो रक्षा के प्रश्न को एक बार फिर केन्द्र बिन्दु में स्थापित कर दिया।

सनातन भारत के भावात्मक प्रतीकों को सायास नष्ट करने के प्रयासों का अशोक सिंहल जी विश्व हिन्दू परिषद के माध्यम से विरोध कर रहे थे। वे मानते थे कि भौतिक उपादानों से राज्य का निर्माण होता है। राष्ट्र के निर्माण के लिये भावात्मक कारकों के प्रति लगाव एवं भक्ति ही इतिहास-सिद्ध मंत्र है।

यह अशोक सिंहल जी की उर्जा ही थी जिसने विश्व हिन्दू परिषद को उसकी पहचान और दिशा दी। परिषद के संस्थापक महासचिव दादा साहिब आप्टे ने परिषद की जो कल्पना की थी, उससे भटका न जाये, इसी की पूर्ति हेतु अशोक जी ने कुछ वर्ष पूर्व हिन्दुस्थान समाचार संवाद समिति के साथ मिल कर (समिति के संस्थापक भी आप्टे ही थे) दादा साहिब आप्टे की जन्म शताब्दी मनाने का निर्णय किया और आप्टे जी की जीवनी लिखने का जिम्मा मुझे सौंपा था। उन जिनों मुझे अशोक जी से बार-बार मिलने का मौका मिलता था, इसलिये उनके अन्तस को जानने का अवसर भी। दरअसल मैं उन दिनों ही अशोक जी के व्यक्तित्व को में सही ढंग से पकड़ पाया।

अशोक जी की हिन्दू व हिन्दुत्व की अवधारणा बहुत व्यापक थी। वे मानते थे कि यूरोपीय बुद्धिजीवियों ने या तो अपनी अज्ञानता के चलते या फिर साम्राज्यवादी षड्यंत्र के कारण हिन्दुत्व को भी सामी सम्प्रदायों के समकक्ष मान कर उसे संकीर्ण मजहबी सीमाओं में समझने की भूल की। दुर्भाग्य से नई शिक्षा पद्धति से पढ़े लिखे लोग भी हिन्दुत्व को उन्हीं संकीर्ण सीमाओं में देखने लगे। अशोक जी हिन्दुत्व को जीवन शैली के तौर पर देखते थे। इसे सुखद संयोग ही कहना चाहिये कि उच्चतम न्यायालय ने भी अपने एक निर्णय में हिन्दुत्व को जीवन शैली की ही संज्ञा दी। शायद यही कारण था कि वे ब्रिटिश शिक्षा पद्धति के स्थान पर भारतीय शिक्षा पद्धति के पक्षधर थे। इस स्थल पर अशोक जी महामना मदन मोहन मालवीय के अनन्य प्रशंसकों में से थे। ये मालवीय जी ही थे जिन्होंने अंग्रेज काल में भी सीमित स्पेस उपलब्ध होने के बावजूद शिक्षा पद्धति को भारतीयता का पुट देने का प्रयोग किया। अशोक जी उसी प्रयोग को आज भी आगे बढ़ाने के पक्षधर थे।

अशोक जी विज्ञान के छात्र थे। लेकिन उनकी रुचियों का क्षेत्र विस्तृत था। शास्त्रीय संगीत उनकी कमजोरी था। शास्त्रीय गायन में सिद्ध हस्त थे। बहुत कम लोगों को ज्ञात होगा कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कार्यक्रमों में गाये जाने वाले अनेक गीतों की लय उन्होंने ही बनाई थी। विदेशी आक्रमणों के कारण भारतीय विज्ञान में होने वाले विकास और शोध की भंग हो चुकी परम्परा को वे पुनः स्थापित करने के पक्षधर थे। वेद-विज्ञान विषय विश्वविद्यालयों में पढ़ाया जाना चाहिये और उनमें स्थापित मान्यताओं को आधुनिक उपकरणों से प्रयोगशालाओं में प्रमाणित भी किया जाना चाहिये। विश्व हिन्दू परिषद में ही कार्य कर रहे एक अन्य प्रचारक विजय कुमार का कहना है कि वेदों में अशोक जी की रुचि अपने कानपुर के कार्यकाल में पैदा हुई। वहाँ उनका सम्पर्क रामचन्द्र तिवारी नाम के विद्वान से हुआ, जिन्होंने उन्हें वेदों की ओर आकर्षित किया। वेदों में उनकी यह रुचि जीवन भर बनी रही। यह संयोग ही कहा जायेगा कि विश्व हिन्दू परिषद के संस्थापक महासचिव दादा साहेब आप्टे विदेशों में स्थान स्थान पर वेद भगवान की स्थापना कर आये थे और उनके उत्तराधिकारी अशोक सिंहल जी अब वेद को विश्व के विज्ञान पटल पर स्थापित करने का उद्यम कर रहे थे ।

पिछले कुछ अरसे से उनके शरीर ने अपनी सीमा के संकेत देने शुरु कर दिये थे। चिन्तन और कर्म की गति का यही विरोधाभास है। कर्म की गति शरीर पर निर्भर है

शेष पृष्ठ 21 पर....

अद्वितीय माननीय अशोक जी सिंहल

-वीरेश्वर द्विवेदी, सदस्य केन्द्रीय प्रबंध समिति-विहिप

विश्व हिन्दू परिषद को सच्चे अर्थों में विश्व-पटल पर प्रस्थापित करने वाले श्रद्धेय अशोक जी सिंहल वस्तुत: एक युग-निर्माता एवं इतिहास-पुरुष हैं। अयोध्या में श्रीराम जन्मस्थान पर 464 वर्षों से खड़े बाबरी ढाँचारूपी कलंक को ध्वस्त करने के लिए 6 दिसम्बर, 1992 को देश के कोने-कोने से लाखों कारसेवकों को 'लक्ष्य-प्राप्ति की बलिवेदी पर अपना तन-मन वारो' की भावना के साथ समवेत करने वाले सिंह-सपूत सिंहल जी हिन्दू समाज के अप्रतिम सेनानायक बनकर उभरे हैं। 'केसरी बाना सजाये वीर का श्रंगारकर, ले चले हम राष्ट्रनौका को भँवर से पार कर' के भाव से भरे इस महानायक का बाबरी ध्वंसकाण्ड के बाद की विदेश-यात्र में इस प्रकार अभिनन्दन किया गया था- एक प्रकार से 'ब्रजादपि कठोराणि, मृदूनि कुसुमादपि' का ही भाव था यह। समाज के इसी आलोड़न-बिलोड़न के बीच उन्हें 'हिन्दू-हृदय सम्राट' का स्थान सहज ही प्राप्त हो गया।

नाभिषेको न संस्कार: सिंहस्य क्रियते वने।
विक्रमार्जितस्य स्वत्वस्य, स्वयमेव मृगेन्द्रता।।

मूलत: उ.प्र. के अलीगढ़ जिले के बिजौली ग्राम का निवासी सिंहल परिवार कालान्तर में प्रयाग आकर बस गया था। श्री अशोक जी के पिताजी श्री महावीर सिंह सिंहल प्रशासनिक अधिकारी थे, उन्होंने प्रसिद्ध 'आनन्द भवन' के निकट एक भूखण्ड लेकर अपना भवन बनवाया था, आज वहीं कमला नेहरू चिकित्सालय के सामने-स्थित विशाल 'महावीर भवन' सिंहल परिवार का पैतृक निवास है। प्रयाग-प्रवास के दौरान अपने अशोक जी का निवास यहीं रहता था। गुरुपूर्णिमा और नवदुर्गा-जैसे अवसरों पर सिंहल परिवार यहीं एकत्र होता है। अतीव आध्यात्मिक रुझान वाले अशोक जी के गुरु पण्डित रामचन्द्र तिवारी (कानपुर) भी यहीं रहकर अपनी साधना किया करते थे। महावीर भवन अब सामाजिक कार्य के लिए पूर्ण रूप से समर्पित कर दिया गया है। इस लेखक को सन् 1975 के आपात्काल के दौरान उनका अत्यधिक स्नेह एवं मार्गदर्शन प्राप्त करने का सुअवसर प्राप्त हुआ है।

आश्विन कृष्ण तृतीया तदनुसार 27 सितम्बर, 1926 को राजा मण्डी आगरा में जन्मे श्री अशोक प्रकाश सिंहल (पूरा नाम यही है) विद्यार्थी-अवस्था में प्रयाग में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सम्पर्क में आये। बाद में बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के आई.टी. संस्थान से धातु विज्ञान से बी.टेक. की पदवी ग्रहण कर 1950 में संघ के प्रचारक बनकर सारा जीवन राष्ट्र-सेवार्थ समर्पित कर दिया। 32 वर्ष तक संघ के विभिन्न दायित्व निर्वाह करने के बाद सन् 1982 में संघ की योजनानुसार विश्व हिन्दू परिषद के संयुक्त महामंत्री की जिम्मेवारी स्वीकार की। उस समय वे संघ के दिल्ली व हरियाणा प्रान्त के प्रचारक थे। इसी दौरान उन्हें डॉ. कर्ण सिंह के साथ 'विराट हिन्दू समाज' का कार्य खड़ा करने का अवसर मिला था। उस समय परिषद के अध्यक्ष महाराणा भगवत सिंह मेवाड़ तथा महामंत्री श्री हरमोहन लाल थे। उपाध्यक्षों में श्रीमंत राजमाता विजयाराजे सिंधिया भी शामिल थीं।

सन् 1982 ई. में तमिलनाडु के तिरुनेलवेली जिले में मीनाक्षीपुरम नामक ग्राम में बहुत बड़ा धर्मान्तरण कर उसे 'रहमत नगर' बना दिया गया था, जिसमें एक हजार से अधिक हिन्दुओं को इस्लमपंथी बना दिया गया था। इसके बाद विहिप की ओर से 'संस्कृति रक्षा योजना' (हिन्दुओं का धर्मान्तरण रोकने व धर्मान्तरित हिन्दुओं को अपनी मूल संस्कृति में वापस लाने-हेतु धर्म रक्षक कार्यकर्ताओं की प्रचण्ड वाहिनी खड़ा करने लिए अक्षय कोष) फिर एकात्मता यात्रा व रामशिलापूजन-जैसे ऐतिहासिक आयोजन हुए। इसी कड़ी में श्रीराम जन्मभूमि मुक्ति-यज्ञ एवं मंदिर-निर्माण आन्दोलन भी प्रारम्भ हुआ। इन सबमें

उनकी अति महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

इन पंक्तियों का लेखक उन सौभाग्यशाली लोगों में शामिल है, जिन्हें ऋषितुल्य अशोक जी की शीतल, स्नेहिल छाया में चहचहाने का सुअवसर प्राप्त हुआ है। युवा पीढ़ी में बेहद लोकप्रिय श्रद्धेय सिंहल जी तब संघ के कानपुर नगर प्रचारक (जी हाँ उत्तर प्रदेश के सबसे बड़े इस नगर को संघ में तब 'महानगर' कहना शुरू नहीं किया गया था।) सन् 1960 के आस-पास तब संघ कार्यालय गाँधी चौक, गाँधी नगर, सीसामऊ में हुआ करता था। वहाँ उनका रहना 8 फीट लम्बी एवं 5 फीट चौड़ी, रेलवे की शायिका-जैसी कोठरी में होता था। किन्तु इस कुटिया के बेजोड़ चुम्बकीय व्यक्तित्व के धनी इस संत के कारण वहाँ तरुणाई का मेला-सा लगा रहता था और वहाँ गपशप व गीतों का दौर-दौरा चलता रहता था। इसी छोटे से स्थान से विलक्षण कार्यकर्ताओं की अद्भुत श्रंखला उद्भूत हुई। इनमें संघ के अ.भा. सह-व्यवस्था प्रमुख मा. बाल जी (बालकृष्ण त्रिपाठी), विश्व हिन्दू परिषद के वर्तमान संयुक्त महामंत्री व एकल विद्यालयों की पचास-हजारी पंक्ति का विक्रम पार करने वाले मा. श्याम जी गुप्त, मध्यभारत के पूर्व प्रान्त प्रचारक मा. शरत चन्द्र मेहरोत्रा (अब स्वर्गीय), आई.आई.टी. कानपुर के प्रोफेसर भूषणलाल धूपड़ (बाद में सह प्रान्त संघचालक), डॉ. जगमोहन गर्ग (क्षेत्र संघचालक पश्चिमी उ.प्र.), मा. वीरेन्द्र पराक्रमादित्य (कानपुर प्रान्त-संघचालक), मा. रामफल सिंह, केन्द्रीय मंत्री विहिप (अब स्वर्गीय), मा. रामेश्वर दयाल शर्मा, केन्द्रीय सहमंत्री विहिप (अब स्व.), श्री गिरीश अवस्थी (राष्ट्रीय अध्यक्ष भारतीय मजदूर संघ)- सरीखे कार्यकर्ता विशेष उल्लेखनीय हैं।

कार्यकर्ताओं का निर्माण आदर्शवाद की कठोर चट्टान पर करने का उनका प्रयास सदैव से रहता रहा है। सन् 70-71 की बातें अभी तक ठीक से याद हैं। कार्यालय पर अति प्रातः जागरण होकर प्रातः स्मरण (उस समय 42 श्लोक वाला लम्बा प्रातः स्मरण था) तत्पश्चात् गीता का 12वाँ अध्याय वे स्वयं ही दोहरवाते थे और उसके बाद 15-20 मिनट तमिल भाषा का पठन-पाठन (तमिलनाडु के इंजीनियर कार्यकर्ता श्री रामाचारी द्वारा) फिर तैयार होकर शाखाओं पर निकलना। यह लेखक तो रात एक-दो बजे 'दैनिक जागरण' के उप सम्पादक की रात्रिकालीन शिफ्ट (डयूटी) पूरी करके लौटता था, अतः प्रभात शाखा पर कार्य करने में बड़ा कष्ट होता था। उन दिनों कार्यालय पर प्रातःकालीन चाय की व्यवस्था नहीं रहती थी।

आज भी मा. अशोक जी की वैसी ही कठोर दिनचर्या है। अति प्रातः तीन बजे जागरण, 1 घण्टे का निजी पाठ, फिर ध्यानकक्ष में सामूहिक एकात्मता (भारतभक्ति) स्तोत्र, 'श्रीराम जय राम जय-जय राम' का विजय महामंत्र और उद्घोष (धर्म की जय हो, अधर्म का नाश हो, प्राणियों में सद्भावना हो, विश्व का कल्याण हो, गोवंश-हत्या बन्द हो, धर्मान्तरण बन्द हो, भारत अखण्ड हो) आदि द्वारा कार्यकर्ताओं का आध्यात्मिक, सांस्कृतिक व राष्ट्रीय व्यक्तित्व गढ़ते रहते हैं।

मा. अशोक जी सदैव अग्रिम मोर्चे पर रहकर नेतृत्व करने वाले सेनापति रहे हैं। उनके जन-जन का हृदयहार बन जाने का रहस्य यही है। अयोध्या में जब 30 अक्टूबर, 1990 को कारसेवकों ने जन्मभूमि के गुम्बदों पर भगवा ध्वज फहराकर अपनी प्राणज्योति को श्रीरामजी की ज्योति में मिलाया था, उस समय अशोक जी सिर में पत्थर लगने से रक्त से सराबोर थे। जब एक पत्रकार कार्यकर्ता ने उनसे पूछा 'अब हम क्या करें? आपका कोई संदेश? "उन्होंने अपनी चोट से हाथ हटाया और गरजकर बोले, "मुझे छोड़ो, जन्मभूमि की ओर बढ़ो, वहाँ कारसेवा करनी है।'' उन्हें अस्पताल ले जाया गया, जहाँ बी.बी. सी. के पत्रकार ने उन्हें सूचना दी कि जन्मभूमि पर कारसेवा हो गई है और मंदिर पर भगवा ध्वज फहरा दिया गया है। यह सुनते ही वे भाव-विह्वल हो गये और बोले ''वी हैव डन इट'' (हमने इसे कर दिखाया)। अभी आगे ध्येय संकल्प की पूर्ति तक उन्हें बहुत कुछ कर दिखाना है।

जब तक लक्ष्य न पूरा होगा,
तब तक पग की गति न रुकेगी।
आज कहे चाहे जो दुनिया,
कल को झुके बिना न रहेगा
हिन्दु राष्ट्र के बिखरे कण-कण को, कर दें चट्टान।
टक्कर ले आने वालों का, रहे न नाम-निशान।
देश करें बलवान, विधि का यही विधान।

दुर्बल देशों का नहिं जग में रहने वाला नाम।

उद्दाम आकांक्षाधारी मा. अशोक जी के प्रचारक निकलने की जानकारी पाकर उनके पिताजी बहुत क्षुब्ध थे। उन्होंने बहुत समझाया-बुझाया, डराया-धमकाया, पर अडिग अशोक जी ने एक ही उत्तर दिया ''अब कुछ भी हो, जब तय कर लिया है तो तय हो चुका। फिर, इसी घर से ही तो शिक्षा पायी है कि जो निश्चय करो, पूरे मन-आत्मा से विवेकपूर्वक करो। यही निश्चय मैंने किया है।''

पिता ने बाध्य होकर अनुमति तो दे दी, पर एक शर्त के साथ, ''वचन दो मुझे कि अब जो निर्णय तुमने ले लिया है, जीवन पर्यन्त इस मार्ग अथवा निर्णय से हटोगे नहीं।''

यह बंधन तो उनके मनमाफिक ही था। वे प्रसन्न ही हुए।

ऐसा भी बताते हैं कि धुन के पक्के मा. अशोक जी जब घर-बार के काम-काज में न उलझकर अपने कर्तव्य-पथ पर डटे रहने की जिद पर ही अड़े रहे, तो उनकी माताजी श्रीमती विद्यावती सिंहल ने अपने अंगूठे के रक्त से तिलक करते हुए उन्हें सात्विक क्रोध के साथ यह कहकर विदा किया था- जा, अपने कर्म में जुट जा।

ऐसा लगता है कि उनके शीश पर उसी आशीष की घनेरी छाया इस 77वें धर्मयुद्ध में उनका शिरस्त्रण बनकर उन्हें 'विजयी भव' व 'यशस्वी भव' का वरदान दे रही है। वह फलीभूत होगा, इसमें कोई संदेह नहीं।

श्रीराम जन्मभूमि मुक्ति यज्ञ समिति के एक महत्वपूर्ण सदस्य वीतराग स्वामी वामदेव जी महाराज (ब्रह्मलीन) का कथन भी इसी से मेल खाता प्रतीत होता है।

''अशोक जी में ईश्वर-प्रदत्त मानवता के अलौकिक गुण हैं। ये गुण उनके स्वर-माधुर्य तथा व्यक्तित्व के माध्यम से प्रभुभक्ति और उससे प्राप्त शक्ति में देखे जा सकते हैं। अनेक साधु-संतों एवं महात्माओं से उन्हें आशीष मिला है। ऐसा आशीष तभी मिलता है, जब उसके योग्य पात्र का चुनाव कर लिया जाता है। देश, जाति और जन-जन कल्याण के निमित्त वे इसीलिए प्रभु-प्रदत्त मानवीय गुणों से आच्छादित हैं। श्रीराम प्रभु के मंदिर-निर्माण हेतु उनके सद् मानवीय प्रयास इसी कारण सदा स्मरण किये जाते रहेंगे। वे इतिहास-पुरुष सिद्ध होंगे।''

मा. अशोक जी के संत व्यक्तित्व से संबंधित एक उदाहरण विशेष उल्लेखनीय है। मार्च, 2011 में नागपुर के पास उदासा नामक स्थान पर विहिप के प्रचारकों का अ.भा. प्रशिक्षण वर्ग आयोजित था। प्रसिद्ध कथावाचक एवं आध्यात्मिक विभूति स्वामी गोविन्ददेव गिरि जी (पूर्व नाम किशोर व्यास) उसके उद्घाटन सत्र के मुख्य अतिथि थे। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरकार्यवाह मा. भैया जी जोशी भी कार्यक्रम में उपस्थित थे। **देश भर के कार्यकर्ता यह देखकर आश्चर्यचकित रह गये कि स्वागत-सत्कार के समय संघ-सरकार्यवाह द्वारा स्वामी गोविन्ददेव गिरि की चरणवन्दना की गई, किन्तु भगवावस्त्रधारी पू.गोविन्ददेव जी ने परिषद्-अध्यक्ष अशोक जी के चरण स्पर्श किये और अपने उद्बोधन में कहा कि श्वेत वस्त्रधारी इस संत का वे सर्वाधिक सम्मान करते हैं।**

अपनी इसी प्रतिष्ठा के बल पर मंदिर-आन्दोलन के अग्रणी अशोक जी इसमें सहस्रों संतों को सम्मिलित करने और इस संघर्ष को समाजव्यापी व सर्वस्पर्शी बनाने में सफल हुए है। इस प्रकार सारे समाज को साथ लिए वे सफलता के सोपानों पर सतत चढ़ते जा रहे हैं।

जहाँ तक मा. अशोक जी का प्रश्न है, **वो तो 'चला उदधि को आज लाँघने ईश्वर का विश्वासी'** के दृढ़ विश्वास के साथ श्रीराममंदिर निर्माण-आन्दोलन में आहुति दे रहे लोगों का यही आह्वान कर रहे हैं-

पहली आहुति है, अभी यज्ञ चलने दो,
दो हवा देश की आग जरा बढ़ने दो
जब हृदय -हृदय पावक से भर जायेगा
सारे भारत का पाप उतर जायेगा।

उनकी दृढ़ आस्था है कि -

बिना राम के मर्यादा का चरमोत्कर्ष कहाँ है?
बिना राम के इस भारत में भारतवर्ष कहाँ हैं?

भगवत्कृपा से यह दृश्य हम अनतिदुर भविष्य में ही देख सकेंगे कि -

चोटें यदि पड़ती रहीं, शिला टूटेगी।
भारत में कोई नई धार फूटेगी।।

❑

श्रद्धांजलि सभा

गत बुधवार दिनांक 25 नवम्बर, 2015 को कोलकाता के तारा सुंदरी पार्क में एक श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। सुबह 11 बजे से श्री राम बिजय महामंत्र, गीता पाठ और सुन्दरकाण्ड 3 बजे तक चलने के बाद श्रद्धांजलि सभा में लगभग 300 लोगों ने पूज्य श्री अशोक जी को उनकी अस्थि कलश पर पुष्पार्घ्य देकर श्रद्धांजलि दी। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, मानव सेवा प्रतिष्ठान, कलकत्ता पिंजरापोल सोसाइटी, बड़ाबाजार लाइब्रेरी, कुमार सभा लाइब्रेरी, कई व्यावसायिक प्रतिष्ठान, आदि ने श्रद्धांजलि दी। केंद्रीय प्रन्याशी श्री श्रीगोपाल झुनझुनवाला, प्रान्त के महामंती डॉ चिन्मोय दत्ता, बिमल लाठ आदि ने स्मृतिचारण किया।

केंद्रीय सहमंत्री श्री नन्द लाल लोहिया ने उनके जीवन पर प्रकाश डाला और कहा की उनके देहावसान के समय वे ओडिशा के प्रवेश के दौरान स्व. लक्ष्मणानंद द्वारा स्थापित जलेशपट्टा आश्रम की 214 बालिकाओं को सम्बोधित कर रहे थे। देहावसान की जानकारी मिलने पर वे फुट-फुट कर रोने लगे और कहा की स्व. लक्ष्मानन्द जी के बाद अब उन्होंने अपने पितृतुल्य अशोक जी को भी खो दिया है। दूसरे दिन सुबह यज्ञशाला में गीता और भगवत का पाठ करने के बाद हनुमान मंदिर में सभी ने सामूहिक श्री हनुमान चालीसा का 108 पाठ 6 घंटे में पूरा किया। अन्य आश्रमों के प्रवास के समय भी ऐसे दृश्य देखने को मिले।

केंद्रीय महामंत्री श्री चम्पत जी ने उनकी जीवन की अनेकों घटनाओं का जिक्र करते हुए उनकी महानताओं पर प्रकाश डाला। श्री रामजन्म भूमि संघर्ष की अनेकों घटनाओं का जिक्र करते हुए उनकी असाधारण संगठन क्षमता व जनमानष के हृदय में स्थान बनालेने की क्षमता का वर्णन किया। उनकी दूरदर्शिता के अनेक उदहारण प्रस्तुत किया।

स्व. अशोक जी की भतीजी अपने पति गौरव स्वरुप जी के साथ सभा में उपस्थित थी। उन्होंने अपने परिवार की बातों का जिक्र करते हुए ताउजी स्व. अशोक जी का सबसे प्रेम व स्नेह की चर्चा की।

अगले दिन दिनांक 26 नवम्बर, 2015 को सुबह संघ कार्यालय केशव भवन से 7 बजे एक सजे रथ में अस्थि कलश लेकर एक बस, 5 गाड़ियों में गंगा सागर के लिए यात्रा प्रारम्भ हुयी जिसमे श्री चंपत राय जी, श्री श्रीगोपाल जी झुनझुनवाला, श्री नन्द लाल लोहिया, श्री सचिन्द्र सिंघा, श्री चिन्मोय दत्ता, श्री सत्यनारायण मॉरिजवाला आदि शामिल हुए। दोपहर 2:24 बजे उनकी अस्थियों का सागर में विसर्जन हुआ।

सम्पूर्ण भारत के संत महापुरुष व कार्यकर्ता अशोक जी के प्रति अपने मन के भाव व्यक्त कर सकें इसलिए संगठनात्मक 44 राज्यों तथा अंडमान, मेघालय, त्रिपुरा, मणिपुर, मेघालय व सिक्किम जैसे छोटे-छोटे राज्यों में श्री अशोक जी सिंहल के अस्थि कलश कार्यकर्ता ले जा रहे हैं या ले जा चुके हैं वे अपनी सुविधानुसार कार्यक्रम तय करेंगे और अपने क्षेत्र के पवित्र स्थल पर अस्थियों का विसर्जन करेंगे। इसी क्रम में 23 नवम्बर को प्रयाग में,

शेष पृष्ठ 19 पर....

लुधियाना-पंजाब में परिषद कार्यकर्ता प्रशिक्षण वर्ग

22 नवम्बर 2015, पंजाब प्रांत के लुधियाना शहर में विश्व हिन्दू परिषद द्वारा दो दिवसीय कार्यकर्ता प्रशिक्षण वर्ग सम्पन्न हुआ।

लुधियाना विभाग के 6 जिला से 80 कार्यकर्ता प्रशिक्षण वर्ग में भाग लिए। संगठन सुदृढ़ीकरण, सामाजिक गतिविधियां में वृद्धि, गौ रक्षा, धर्मान्तरण रोध, सेवा कार्य का विस्तार के बारे में चर्चा हुई। युवा समाज को नशा आदि से मुक्त करके समाज के कार्य में जोड़ने की योजना की रचना दो दिवसीय वर्ग बनाई गयी।

वर्ग में मार्गदर्शन हेतु प्रांतीय उपाध्यक्ष श्री इन्द्रदेव शर्मा जी, विभाग मंत्री श्री प्रदीप मिश्रा जी, विभाग कार्याध्यक्ष श्री प्रशांत जोशी जी, विभाग संगठन मंत्री श्री दयाशंकर जी, विभाग संयोजक श्री आशीष बोनी जी, विभाग चालीसा प्रमुख श्री चेतन मल्होत्रा जी उपस्थित थें।

प्रकाश पर्व पर निकाली प्रभात फेरी

प्रकाश पर्व गुरु नानाक जयन्ती पर गोपाल पार्क गुरुद्वारे से एक प्रभात फेरी निकाली गई। जिसमे प्रमुख रुप से अखण्ड भारत मोर्चा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री संदीप आहूजा, आर.डब्लू.ए. के प्रधान श्री राजे शर्मा, गुरुद्वारा प्रधान सरदार गुरुचरण सिंह जुनेजा, स.पृथ्वीपाल सिंह पाली, स.गुरुप्रीत जुनेजा, स.मंजीत सिंह, स.सोनू चावला, श्री धर्मपाल वाल्मीक, श्री सचिन अरोड़ा, श्री लोकेश कोछड़ आदि गणमान्य लोग सम्मलित हुऐ। प्रभात फेरी गोपाल पार्क से प्रारम्भ होकर न्यू लॉयल पुर एक्स. चंदू पार्क, राम नगर एक्स., न्यू लॉयल पुर कालोनी, सोम बाजार चौक होते हुऐ इन्द्रा पार्क पर सम्पन्न हुई। प्रभात फेरी का जगह जगह भव्य स्वागत किया गया एवं प्रत्येक कॉलोनी मे प्रसाद भंडारे की व्यवस्था थी।

प्रेषक : **राजश्री आहूजा**
प्रचारमंत्री

बजरंगियों ने मनाया "शौर्य दिवस"

जम्मू 7 दिसम्बर, बजरंगदल द्वारा देशभर में मनाए जा रहे "शौर्य दिवस" के अर्तगत जम्मू कश्मीर प्रान्त में भी शौर्य दिवस का कार्यक्रम मनाया गया एवं स्व. श्री अशोक सिंघल जी को श्रद्धांजलि दी गई। इस अवसर पर वक्ताओं ने बजरंगियों को सम्बोधित करते हुए कहा कि विश्व हिन्दू परिषद के संरक्षक स्व. श्री अशोक जी का स्वप्न था कि उत्तर प्रदेश स्थित अयोध्या में भव्य श्रीराम मंदिर बने। इस राम मंदिर का निर्माण विश्व हिन्दू परिषद्, सन्त समाज द्वारा जल्द ही अयोध्या में किया जाऐगा। वक्ताओं ने कहा कि बाबर के वजीर मीर बांकी द्वारा उत्तर प्रदेश प्रान्त में अयोध्या स्थित श्रीराम मंदिर को ढाह कर बाबरी मस्जिद का निर्माण करवाया था। 6 दिसम्बर 1992 को सम्पूर्ण हिन्दू समाज ने अपने बाहुबल पर विवादित बाबरी ढांचे को गिरा दिया था। बजरंगियों को सम्बोधित करते हुए वक्ताओं ने कहा कि बजरंगदल सेवा, सुरक्षा, संस्कार के आधार पर काम करता है। साधू, सन्त, महात्माओं की सुरक्षा, मंदिर-मठों की रक्षा, धर्मांतरण, घुसपैठ, लव जिहाद आदि बुराईयों को खत्म करना ही बजरंगदल का उद्देश्य है। ''जय श्रीराम'' के जयघौष लगाते हुए बजरंगियों ने अयोध्या स्थित श्रीरामजन्मभूमि पर भव्य श्रीराम मंदिर निर्माण की संकल्प दोहराया। इस अवसर पर बजरंगदल के कार्यकर्ताओं ने रिहाड़ी स्थित प्रान्त कार्यालय शक्ति आश्रम से मोटरसाईकिल रैली निकाली जो पुराने शहर से होती हुई वापिस प्रान्त कार्यालय में आकर सम्पन्न हुई। इस रैली का विभिन्न स्थानों पर स्थानीय लोगों द्वारा स्वागत भी किया गया।

इस अवसर पर विहिप प्रान्त संरक्षक डा. रमाकान्त दूबे, प्रान्त अध्यक्ष लीलाकरण शर्मा, प्रान्त मंत्री शक्ति दत्त शर्मा, सुरेन्द्र मोहन अग्रवाल, मातृशक्ति/दुर्गावाहिनी की माताएं/बहनें, बजरंगदल प्रान्त संयोजक नवीन सूधन, बजरंगदल प्रान्त सह संयोजक राकेश शर्मा, कार्तिक सूधन, माधव वैद्य, विक्की चौधरी मलंग व अन्य अनेक बजरंगी उपस्थित थे।

-**राजेश भसीन**, जम्मू

....पृष्ठ 17 का शेष

24 को वृन्दावन में, 26 को गंगा सागर व जगन्नाथ पुरी, 27 को अयोध्या में तथा 29 को हरिद्वार तथा मुंबई आदि स्थानों पर अस्थि विसर्जन के कार्यक्रम हुए। हरिद्वार के लिए अस्थिकलश यात्रा राजधानी दिल्ली से 28 को प्रातः 7 बजे रामकृष्ण पुरम स्थित विहिप मुख्यालय से दर्जनों बहनों के साथ प्रस्थान कर मार्ग में पड़ने वाले गाजियाबाद, मुरादनगर, मोदीनगर, मेरठ, मुजफ्फरनगर तथा रुड़की इत्यादि प्रमुख स्थानों पर भी दिवंगत महात्मा को श्रद्धा सुमन अर्पित किए गये।

प्रेषक : **विनोद बंसल**
प्रवक्ता-विश्व हिन्दू परिषद
संपर्क : 9810949109

सर्वदलीय गौरक्षा मंच की राष्ट्रीय अध्यक्ष धर्मवीर ठाकुर जयपाल सिंह नयाल स्वामी करपात्री जी महाराज के 1966 के गौरक्षा आनदोलन की 50वीं वर्षगाठ पर सभी सांसदों (संसद) से गौ माताओं के साथ सत्याग्रह पर दिल्ली जंतर-मंतर पर धरने पर बैठे है। उनकी मुख्य मांग

1- गौरक्षा पर हो संसद में चर्चा - बाहर बहुत चर्चा हो रही है गौ रक्षा पर पर संसद में सब चुप है।

2- दूसरी मांग - विद्या के मंदीर को बीफ पार्टी से ना किया जाय अपवित्र। उस्मानिया में आगामी 10 तारीख को हो रहे बीफ पार्टी को उन्होंने आज जंतर-मंतर में संतो और गौ भक्तों के बीच जम कर उठाया और कई सांसदों को मिल कर विरोध किया।

नयाल जी अगले 21 दिसंबर तक जंतर-मंतर पर लगातार धरने पर बैठंगे जब तक संसद का शीतकालीन सत्र चलता रहेगा। धरना स्थल पर कई संतो और गौरक्षा संगठनों का समर्थन देना लगातार जारी है। ❑

अशोक सिंहल को श्रद्धांजलि देने उमड़ा लखनऊ

अस्थि कलश यात्रा के दौरान जगह-जगह लोगों ने अर्पित की श्रद्धांजलि

27 को अयोध्या के संत सरयू में करेंगे सिंहल की अस्थियों का विसर्जन

लखनऊ, 26 नवम्बर। विश्व हिन्दू परिषद (विहिप) के अन्तर्राष्ट्रीय संरक्षक अशोक सिंहल की अस्थि कलश यात्रा के दौरान गुरूवार को राजधानी लखनऊ में जगह-जगह लोगों ने पुष्पाजंलि कर श्रद्धासुमन अर्पित किये। विहिप के प्रान्तीय कार्यालय श्रीरामभवन से प्रातः 09 बजे से शुरू होकर **''रामलला हम आयेंगे मन्दिर वहीं बनायेंगे''** और **अशोक सिंहल अमर रहें, अशोक जी का स्वप्न अधूरा हम सब मिलकर करेंगे पूरा** जैसे नारों के बीच अस्थिकलश यात्रा शाम को बर्लिंगटन चौराहे पर संपन्न हुई। अस्थि कलश यात्रा के दर्शन करने के लिए जगह-जगह लोग उमड़े।

गौरतलब हो कि अस्थि कलश सोमवार यानि 23 नवंबर को ही राजधानी पहुंच चुकी थी। विहिप कार्यालय में उसे तीन दिन तक लोगों के दर्शन के लिए रखा गया। तय कार्यक्रम के अनुसार गुरुवार को उसे पूरे शहर में श्रद्धांजलि देने के लिए घुमाया गया। विहिप के क्षेत्र संगठन मंत्री रास बिहारी ने बताया कि यात्रा पूरे शहर में घूमते हुए बर्लिंग्टन चौराहे पर प्रदीप भार्गव के यहां रातभर रुकेगी। उसके अगले दिन अयोध्या के लिए रवाना होगी।

प्रान्त सह मीडिया प्रभारी अम्बुज कुमार ओझा ने बताया कि एक रथ पर अशोक सिंघल का अस्थि कलश और उनकी फोटो रखकर पूरे शहर में घूमाया गया ताकि हर कोई दर्शन कर अपनी श्रद्धांजलि दे सके। श्रीराम भवन कार्यालय से होते हुए ऐशबाग, बालागंज, कोनेश्वर चौक, मेडिकल चौराहा, डालीगंज, निशातगंज, एलयू, सुभाष चौक, हजरतगंज चौराहा होते हुए बर्लिंग्टन चौराहे पर प्रदीप भार्गव के यहां रातभर रुकेगी। उन्होंने बताया कि अशोक सिंघल जब भी लखनऊ आते थे तो यहां रुकते थे। इसके बाद यह अस्थि कलश सुबह करीब 7 बजे बाराबंकी होते हुए अयोध्या जायेगी। लखनऊ विश्व विद्यालय के सामने अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के कार्यकर्ताओं ने मिथिलेश त्रिपाठी के नेतृत्व में अस्थि कलश यात्रा पर पुष्प वर्षा की और अस्थियों के दर्शन कर पुष्पांजलि अर्पित की।

हजरतगंज में हनुमान मंदिर के सामने सायं जिला कार्यवाह अतुल सिंह, सायं नगर कार्यवाह रवि जायसवाल, भाग कार्यवाह लोकेश, नगर कार्यवाह राजेश, रमाकान्त, नगर बौद्धिक प्रमुख संदीप, जिला महामंत्री युवा मोर्चा विशाल समेत तमाम कार्यकर्ताओं ने पुष्पांजलि अर्पित की।

वहीं विधानसभा के सामने भाजपा के प्रदेश कार्यालय प्रभारी भारत दीक्षित, सह कार्यालय प्रभारी लक्ष्मण सिंह, प्रदेश मीडिया

प्रभारी मनीष दीक्षित समेत दर्जनों कार्यकर्ताओं ने पुष्पांजलि अर्पित की।

यात्रा में पूरे समय विहिप के क्षेत्र संगठन मंत्री रास बिहारी, प्रान्त संगठन मंत्री, विहिप के प्रान्तीय अध्यक्ष बृजेन्द्र नाथ शुक्ल, महानगर अध्यक्ष कन्हैया लाल नगीना, प्रान्त मंत्री राम सेवक शर्मा, सह प्रान्त मंत्री आचार्य जितेन्द्र रामायणी, सह मंत्री वेद प्रकाश सचान और प्रान्तीय धर्म प्रसार विभाग के प्रमुख धर्मेन्द्र सिंह प्रमुख रूप से थे।

सरयू में विसर्जित की सिंहल की अस्थियां

प्रान्त सह मीडिया प्रभारी अम्बुज कुमार ओझा ने बताया कि अयोध्या के संत महंत 27 नवम्बर को सरयू में विहिप के संरक्षक अशोक सिंहल की अस्थियों का विसर्जन किया गया। इस दौरान विहिप के बड़े पदाधिकारी भी मौजूद रहें। अयोध्या से अशोक सिंहल का हृदय से नाता रहा है। अशोक सिंहल ने अयोध्या से ही अखण्ड गर्जना कर सम्पूर्ण हिन्दुओं को संगठित कर श्रीराम जन्मभूमि मुक्ति आन्दोलन की शुरूआत की थी। सिंहल जब भी अयोध्या आते थे तो संतो से मुलाकात के बगैर नहीं लौटते थे। फैजाबाद जिले की सीमा में 60 किमी. तक जगह-जगह पुष्पार्चन हुआ। अस्थि कलश यात्रा लखनऊ से चलकर 10 बजे फैजाबाद लोकसभा क्षेत्र में प्रवेश की। इससे पहले बाराबंकी, रामसनेही घाट, मवई चौराहा, भेलसर चौराहा, सोहावल होते हुए फैजाबाद के प्रमुख स्थानों से होते हुये सरयू तट नया घाट (पक्का घाट) पर अस्थि कलश का विसर्जन हुआ। यात्रा में संघ, विहिप व भाजपा के अनेक वरिष्ठ पदाधिकारी लखनऊ से चलकर अयोध्या सरयू तट पहुंचें।

कलश-यात्रा में प्रमुख रूप से क्षेत्र संगठन मंत्री रास बिहारी जी, प्रान्त संगठन मंत्री भोलेन्द्र जी, अजय मौर्या, वेद सचान, रामू द्विवेदी, चन्दू जी आदि सैकड़ों कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

भवदीय

अम्बुज कुमार ओझा

प्राप्त सह मीडिया प्रभारी

विश्व हिन्दू परिषद

मो0-9839019494, 9235066661

....पृष्ठ 13 का शेष

और शरीर की क्षमता और उमर, दोनों सीमित हैं। चिन्तन तो कालातीत है परन्तु शरीर तो काल के पाये से बन्धा हुआ है। काल के पाये से बन्धा यह शरीर ही अब धीरे-धीरे उनका साथ नहीं दे रहा था। शरीर के इन संकेतों को उनसे ज्यादा और कौन समझ सकता था? वे ऋषि परम्परा के सिद्ध पुरुष थे। संघर्षों की ज्वाला में साधना करते सन्यासी योद्धा थे। कुछ मास पहले की बात है। उनका फोन आया। उन्होंने दिल्ली बुलाया था। मैं वहाँ गया और मिला तो अरुन्धति वसिष्ठ अनुसन्धान पीठ की चर्चा शुरु कर दी। प्रो. मुरली मनोहर जोशी पीठ के मार्गदर्शक हैं। सुब्रह्मन्यन स्वामी उसके अध्यक्ष हैं, इत्यादि बताते रहे। मुझे समझ नहीं आ रहा था कि मुझे सब क्यों बता रहे हैं। फिर बोले, मैं चाहता हूँ आप इस पीठ के महासचिव का कार्यभार संभालें। मैं चुप हो गया और वे भी। कुछ देर बाद शायद अपने आप से ही बोल रहे हों, भारत का रास्ता इसी एकात्म मानव दर्शन से निकलेगा और कोई रास्ता नहीं है। मैंने उनके चरण स्पर्श किये और उनके स्वप्न को धारण किया। मेरे लिये यही अशोक जी का प्रसाद था।

उस वीरव्रती ने अपना सम्पूर्ण जीवन भारत माता के चरणों में खपा दिया। स्वयं के लिये किसी पद की कामना नहीं की। आपात्काल में जेल में हम जयप्रकाश नारायण की जेल में समगल की गई एक कविता पढ़ा करते थे, जिसमें जयप्रकाश नारायण ने लिखा था कि यदि मैं चाहता तो कितना ही बड़ा पद प्राप्त कर सकता था। पद मेरे पास चल कर आये। लेकिन मेरा उद्देष्य पद प्राप्त करना नहीं था। यही भाव अशोक सिंहल जी का था। पद प्राप्त करना उनके जीवन मार्ग का हिस्सा ही नहीं था। इस प्रकार की एषनाओं से वे कहीं उपर थे। वे समस्त मानव जाति की मंगल कामना के लिये भारतीय दर्शन के विविध प्रयोग कर रहे थे। यही उनका रास्ता था। यही मानव मंगल का रास्ता है। सुरुचि प्रकाशन में कार्य कर रहे विजय कुमार ने लिखा, जिनके लिये सारा देश शोक में डूबा है वे स्वयं अ-शोक थे।

❑

जम्मू-कश्मीर की पवित्र नदियों में विसर्जित की गई मा० अशोक सिंघल जी की अस्थियाँ

जम्मू 30 नवम्बर, विश्व हिन्दू परिषद के अर्तराष्ट्रीय संरक्षक मा0 श्री अशोक सिंघल जी का देहांत 17 नवम्बर 2015 दोपहर 2:26 मिनट पर मेदांता अस्पताल में उपचार के अन्तर्गत हुआ। 23 नवम्बर प्रात: अन्य प्रान्तों की भांति जम्मू प्रान्त में भी स्व0 श्री अशोक सिंघल जी का अस्थि कलश विहिप प्रान्त सह मंत्री शक्ति दत्त शर्मा एवं सुदर्शन खजूरिया द्वारा विहिप प्रान्त कार्यालय शक्ति आश्रम, जम्मू लाया गया। 26 नवम्बर बाल निकेतन, वेद मंदिर, अम्बफला सभागार में श्रद्धांजलि समारोह का आयोजन किया गया जिसमें जम्मू-कश्मीर प्रान्त के राष्ट्रीय स्वंय सेवक संघ के संघचालक ब्रिगेडियर सुचेत सिंह, विहिप प्रान्त संरक्षक डॉ0 रमाकान्त दूबे, हेमराज खजूरिया, विहिप प्रान्त अध्यक्ष लीला करण शर्मा, सुरेन्द्र मोहन अग्रवाल, विहिप कार्यालय मंत्री बालकृष्ण जी, जम्मू-कश्मीर विधानसभा के स्पीकर कविन्द्र गुप्ता, जम्मू पश्चिम के विधायक सत शर्मा, जम्मू पूर्व के विधायक राजेश गुप्ता, एम.एल.सी. अशोक खजूरिया, एम.एल.सी. रमेश अरोड़ा आदि ने मा0 अशोक सिंघल जी को श्रद्धांजलि अर्पित की। इस अवसर पर वक्ताओं ने कहा कि अशोक जी का जन्म आश्विन कृष्ण पंचमी (27 सितम्बर, 1926) को उ.प्र. के आगरा नगर में हुआ था। उनके पिता श्री महावीर सिंहल शासकीय सेवा में उच्च पद पर थे। घर के धार्मिक वातावरण के कारण उनके मन में बालपन से ही हिन्दू धर्म के प्रति प्रेम जाग्रत हो गया। उनके घर संन्यासी तथा धार्मिक विद्वान आते रहते थे। कक्षा नौ में उन्होंने महर्षि दयानन्द सरस्वती की जीवनी पढ़ी। 1947 में देश विभाजन के समय कांग्रेसी नेता सत्ता प्राप्ति की खुशी मना रहे थे। पर देशभक्तों के मन इस पीड़ा से सुलग रहे थे कि ऐसे सत्तालोलुप नेताओं के हाथ में देश का भविष्य क्या होगा? अशोक जी भी उन देशभक्त युवकों में थे। अत: उन्होंने अपना जीवन संघ कार्य हेतु समर्पित करने का निश्चय कर लिया। बचपन से ही अशोक जी की रुचि शास्त्रीय गायन में रही है। संघ के अनेक गीतों की लय उन्होंने ही बनायी है। 1948 में संघ पर प्रतिबन्ध लगा, तो अशोक जी सत्याग्रह कर जेल गये। वहाँ से आकर उन्होंने बी.ई. अंतिम वर्ष की परीक्षा दी और प्रचारक बन गये। अशोक जी की सरसंघचालक श्री गुरुजी से बहुत घनिष्ठता रही। 1975 से 1977 तक देश में आपातकाल और संघ पर प्रतिबन्ध रहा। इस दौरान अशोक जी इंदिरा गांधी की तानाशाही के विरुद्ध हुए संघर्ष में लोगों को जुटाते रहे। आपातकाल के बाद वे दिल्ली के प्रान्त प्रचारक बनाये गये। परिषद के काम में धर्म जागरण, सेवा, संस्कृत, परावर्तन, गोरक्षा.. आदि अनेक नये आयाम जुड़े। इनमें सबसे महत्त्वपूर्ण है श्रीराम जन्मभूमि मंदिर आन्दोलन, जिससे परिषद का काम गाँव-गाँव तक पहुँच गया। इसने देश की सामाजिक और राजनीतिक दिशा बदल दी। भारतीय इतिहास में यह आन्दोलन एक मील का पत्थर है। आज वि.हि.प. की जो वैश्विक ख्याति है, उसमें अशोक जी का योगदान सर्वाधिक है। अशोक जी परिषद के काम के विस्तार के लिए विदेश प्रवास पर जाते रहे हैं। इसी वर्ष अगस्त-सितम्बर में भी वे इंग्लैंड, हॉलैंड और अमरीका के एक महीने के प्रवास पर गये थे। स्व0 श्री अशोक सिंघल जी की अस्थियां जम्मू-कश्मीर प्रान्त की पवित्र नदियों में विसर्जित की गई। श्रद्धांजलि समारोह में सभी सभा-सोसाईटियों के प्रतिनिधि, बजरंगदल, मातृशक्ति, दुर्गावाहिनी, अभविप के कार्यकर्ता व अन्य उपस्थित थे।

राजेश भसीन

मन्दिर निर्माण के लिए बने संसद में कानून

-संदीप आहूजा

अखण्ड भारत मोर्चा पूर्वी संभाग के तत्वधान में शौर्य दिवस के अवसर पर एक विशाल दुपहिया वाहना रैली निकाली गई। **हिन्दू चेतना रैली** को अखण्ड भारत मोर्चा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री संदीप आाहूजा एवं महंत राम गोाविन्द दास जी एवं हिन्दू नेता स्वामी ओम जी ने भगवा झंडी दिखाकर आरम्भ किया।

गुरू नानक जयंती व दीप-दीपावली पर यज्ञ तथा विजय महामंत्र का जाप

-श्री दिनेश शर्मा जी, पंजाव केसरी

नई दिल्ली नवम्बर 26, 2015। विश्व हिन्दू परिषद द्वारा दीप-दीपावली व गुरु नानक देव जी के प्रकटोत्सव पर दिल्ली में अनेक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। जगह-जगह जहां हवन, यज्ञ, सत्संग तथा दीप-दान के कार्यक्रम किए गए वहीं अयोध्या में भव्य राम मंदिर हेतु 'श्री राम जय राम, जय जय राम' नामक तेरह अक्षरीय विजय महा मंत्र के जाप भी बड़ी संख्या में हुए। इस अवसर पर विहिप प्रवक्ता श्री विनोद बंसल ने कहा कि गुरु नानक देव जी प्रेम, शान्ति व आध्यात्मिक शक्ति वाले एक दिव्य महा पुरुष थे। वे लोक मंगल के लिए इस धरती पर उतरने वाले एक ऐसे महात्मा थे जिन की वाणी के बिना कोई भी सत्संग अधूरा सा लगता है। उन्होंने यह भी कहा की आज से लगभग 544 वर्ष पूर्व तलबंडी (ननकाना साहिब) के एक हिन्दू खत्री परिवार में जन्मे गुरू नानक देव जी ने अपना पूरा जीवन समाज व राष्ट्र कल्याण में लगा दिया।

दक्षिणी दिल्ली स्थित आर्य समाज-संत नगर में आयोजित नानकवाणी यज्ञ के अवसर पर वैदिक विदुषी श्रीमती विमलेश आर्या ने कहा कि नानक के पद गुरू ग्रंथ साहिब व उनकी रचना जपुजी साहिब, असादीवार, रहिरास तथा सोहिल जैसे ग्रंथों में वेद, उपनिषद, रामायण, श्रीमद भागवदगीता व महाभारत आदि सभी का समावेश है।

कार्तिक पूर्णिमा के विशेष मुहूर्त के चलते विहिप ने अयोध्या में भगवान श्री राम की जन्म भूमि पर भव्य मंदिर निर्माण की बाधाओं को दूर करने हेतु पुरे देश में 'श्री राम जय राम, जय जय राम' नामक तेरह अक्षरीय विजय महा मंत्र के जाप भी बड़ी संख्या में किए तथा अपने दिवंगत नेता श्री अशोक सिंहल के राम मंदिर के संकल्प को पूरा करने के लिए प्रभु से कामना की।

राजधानी के विभिन्न हिस्सों में हुए इन कार्यक्रमों में विहिप दिल्ली की उपाध्यक्षा श्रीमती संजना चौधरी, मंत्री श्री राम पाल सिंह, बजरंग दल संयोजक श्री नीरज दोनेरिया, दुर्गा वाहिनी संयोजिका कु. कुशुम सहित अनेक गणमान्य लोगों ने समाज के विविध वर्ग के लोगों के साथ भाग लिया, वैदिक मंत्रों से यज्ञ में विशेष आहुतियाँ दीं गईं तथा गुरु नानक देव जी के जीवन, कार्तिक पूर्णिमा तथा दीप-दीपावली के महत्व पर प्रकाश डाला।

भवदीय

विनोद बंसल

शौर्य दिवस पर दिल्ली में हजारों रामभक्तों ने लिया भव्य मन्दिर का संकल्प

नई दिल्ली। दिसंबर 6, 2015। शौर्य दिवस के उपलक्ष्य में विहिप व बजरंग दल द्वारा दिल्ली में आयोजित अनेक कार्यक्रमों में हजारों राम भक्तों ने भाग लेकर राम जन्मभूमि पर भव्य मंदिरनिर्माण हेतु संकल्पव्यक्त किया। देशव्यापी कार्यक्रमों के अंतर्गत कहीं रक्तदान शिविर, कहींशौर्य यात्रा, कहीं महा चालीसा तो कहीं महा आरती के कार्यक्रमों की श्रंखला में राजधानी के कोने-कोने में भी रामभक्तों ने न सिर्फ भाग लिया बल्कि आतिशबाजी भी की। इस अवसर पर विहिप के प्रांत मंत्री श्री रामपाल सिंह तथा बजरंग दल संयोजक श्री नीरज दोनेरिया ने कहा कि गत 487 वर्षों में हुए 76 युद्धों में तीन लाख से अधिक हिन्दुओं ने बलिदान दिए, सन 1950 से 2010 तक न्यायिक प्रक्रिया में पूर्ण विश्वास रख उसके निर्णय की प्रतिक्षा की किन्तु सितम्बर 2010 में माननीय उच्च न्यायालय के स्पष्ट निर्णय के बावजूद गत 5 वर्षों से हिन्दू समाज फिर प्रतीक्षा करने को बाध्य है। अब हिन्दू समाज चाहता है कि सोमनाथ मंदिर की तर्ज पर संसदीय कानून के माध्यम से भगवान राम की जन्मभूमि पर भव्य मंदिर का निर्माण शीघ्र कराया जाए।

इंद्रप्रस्थ विश्व हिन्दू परिषद व बजरंग दल, पश्चिमी दिल्ली द्वारा शाम 4.30 से 7 बजे तक तिलक नगर मार्किट में शौर्य पदयात्रा निकाली गई जिसमे हजारों लोगों ने भाग लिया। इस यात्रा में तिलक नगर मार्किट की तीनो असोसिएशनो, मंदिर समितियों तथा धार्मिक और सामाजिक क्षेत्र की संस्थाओं ने यात्रा का जगह-जगह भव्य स्वागत किया। यह यात्रा श्री गीता भवनमंदिर से प्रारम्भ होकर मॉल रोड, मेंन मार्किट चौक, आर्य समाज, 16 ब्लॉक, पुरानी मार्किट होते हुए श्री गीता भवन मंदिर पर ही समाप्त हुई। जगह-जगह यात्रा मार्ग पर आतिशबाजी भी की गई।

इसके अतिरिक्त पूर्वी दिल्ली के विवेकानंद युवा केंद्र खुरेजी, उत्तरी दिल्ली के जलेबी चौक तथा दक्षिणी दिल्ली के नेहरू नगर में जहाँ आतिशबाजी, राम धुन तथा महा आरती का आयोजन कर संकल्प लिया तो वहीं यमुना विहार में बजरंग दल कार्यकर्ताओं ने लगभग 100 युनिट रक्तदान किया।

इन कार्यक्रमों में विश्व हिन्दू परिषद्, बजरंग दल, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, हिन्दू हेल्पलाइन, इंडिया हेल्थ लाइन, वीर हिन्दू जागृति मंच सहित अनेक धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक व शैक्षणिक संस्थाओं ने भागलेकर भव्य मंदिर के लिए अपनी प्रतिबद्धता व्यक्त की।

पश्चिमी विभाग शौर्य दिवस की झांकी

प्रेषक : **विनोद बंसल**
प्रवक्ता, विश्व हिंदू परिषद

बिहार के चुनाव से भारतीय लोकतन्त्र प्रणाली में आवश्यक सुधार की आवश्यकता के संकेत मिले-भारतीय मतदाता संगठन

-रिखबचन्द जैन

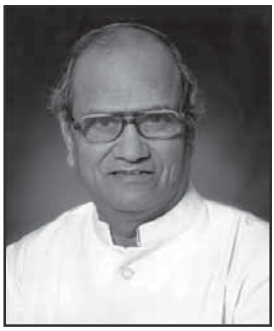

भारतीय मतदाता संगठन ने ऐतिहासिक तौर पर बहुचर्चित अपने तरह के एक अनूठे चुनाव जो हाल ही में बिहार में सम्पन्न हुए का विशिष्ट विश्लेषण द्वारा बताया कि बिहार के चुनाव से लोकतन्त्र की प्रणाली में आवश्यक सुधार के महत्त्वपूर्ण संकेत मिले हैं। बिहार का चुनाव राज्य का चुनाव था। फिर भी इसके लिए पूरा देश कई नई दिशाओं को प्रभावित करने वाला चुनाव समझ रहा था। सभी राजनैतिक पार्टियां इस महा दंगल में, महायुद्ध में पूरे जोर-शोर से अधिकतम साधन और संसाधनों के साथ, नयी-नयी तकनीकों के साथ, नयी कुटिलता के साथ लगे रहे। नई दिशा और नई दशा बदलने का काम तो इस चुनाव ने किया ही है। जैसे सोचा जा रहा था किया ही है।

अब तक का सबसे बड़ा खर्चीला चुनाव रहा है। धनबल, बाहुबल, जाति और धर्म के नाम पर ध्रुविकरण के प्रयास चरण स्थिति पर रहे। अगले-पिछले की राजनीति भी चली। आरक्षण का मुद्दा भी चला। कहने को विकास का मुद्दा था। मंहगाई का मुद्दा था। सुशासन का मुद्दा था। कौन किसको अच्छा अवसर दे सकता है लेकिन संविधान में कुछ भी लिखा हो, चुनाव संहिता कुछ भी कहती हो, चुनाव की प्रक्रिया टिकट बांटने से लेकर वोटर को लुभाने के लिए जाति-वादी कार्ड और धर्म का कार्ड सबसे अधिक तेज चलाये गये। वोटर ने समझदारी तो दिखाई लेकिन धर्म और जाति के चक्र से बाहर नहीं निकल पाये। धन बल, बाहुबल का विशेष प्रभाव रहा। अनेक उम्मीदवार करोड़पति थे। उनकी संख्या पिछले चुनाव से बढ़ी। दोबारा चुनाव लड़ने वाले उम्मीदवारों की सम्पति पांच वर्षों की अवधि में कई गुणा बढ़ी। सुशासन में कमियों के व्यापक संकेत है।

प्रत्येक उम्मीदवार ने चुनाव आचार संहिता की मर्यादा को ताक में रखते हुए कई गुणा खर्च किया है। सभी आंकड़ों से यह स्पष्ट है कि यह चुनाव अब तक का सबसे मंहगा चुनाव रहा। प्रत्येक उम्मीदवार ने करोड़ों खर्च किए। किसी भी साधनहीन योग्य व्यक्ति के लिए चुनाव लड़ना असम्भव। ईमानदार और योग्य व्यक्ति के लिए भी असम्भव। चुनाव के लिए स्टेट फंडिंग में विचार होना चाहिए। स्टेट फंडिंग होनी ही चाहिए। चुनाव खर्च पर और प्रभावी अंकुश लगने चाहिए तभी योग्य ईमानदार प्रतिनीधि चुनाव में खड़े होने की हिम्मत कर सकेगें। चुनाव आयोग और विधि आयोग ने इस संबंध में अनेक सुझाव दे रखे हैं।

इतनी उत्तेजनात्मक चुनाव में भी राजनैतिक पार्टियां, चुनाव आयोग के भरपूर प्रचार के बावजूद, बिहार में वोटिंग प्रतिषत मामूली सी बढ़ा पाये। 2005 के चुनाव में यह वोटिंग 45.85% थी। जब की 2014 के लोकसभा चुनाव में यह 55.38% थी। अभी के चुनाव में यह 56. 80% हुई। इतना पैसा खर्च करके भी राजनैतिक पार्टियां चुनाव में वोटिंग प्रतिशत तक नहीं बढ़ा सकी, अफसोस। बिहार चुनाव के साथ ही अभी म्यांमार में अनेक वर्षों बाद चुनाव हुए और 80 प्रतिशत वोटिंग हुई। भारतीय मतदाता संगठन वोटिंग प्रतिशत 90-95 प्रतिशत तक ले जाने की आवश्यकता बताते हैं। तभी चुनाव के परिणाम सुखद होगें। देश के नागरिकों में मतदान के प्रति जागरूकता बढ़नी चाहिए। बिहार के चुनाव में महिला मतदाताओं ने पुरूष मतदाताओं की तुलना में 5 प्रतिशत अधिक वोटिंग की। अतः यह स्पष्ट है कि महिलाओं की तुलना में पुरूष मतदाता ज्यादा लापरवाह है/गैर जिम्मेवार है। हालांकि महिलाओं ने 5 प्रतिशत वोटिंग ज्यादा की पुरूषों से जबकि 3178 पुरूष उम्मीदवारों के सामने सिर्फ 272 महिलायें उम्मीदवार थी। जो कि करीब 10 प्रतिशत से भी

कम है। इसे बढ़ना चाहिए। विधान सभा में जीतने वाली महिलाओं की संख्या 2010 की तुलना में भी घटी है। 243 सदस्यों के सदन में सिर्फ 28 महिलायें सदन में पहुंचने में सफल हुई है। जबकि पिछले सदन में 38 महिलायें थी। महिलाओं का प्रतिनीधित्व 15 प्रतिशत से 11.5 घटा।

मतदाताओं ने लोकसभा चुनाव से अलग मुद्दों को ध्यान में रखकर एक तरफा वोटिंग की। ताकि बिना जोड़-तोड़ के सरकार बन सके। बिहार विधान सभा में इस बार 243 के सदन में 142 दागी चेहरे हैं। अब तक की सभी विधान सभाओं में, बिहार की विधान सभा में सबसे अधिक प्रतिशत दागी विधायकों की संख्या का 58 प्रतिशत है। यू.पी. के सदन में अभी 48% दागी चेहरे है। दागी चेहरों की गिनती में खराब छवि के सदस्यों की गिनती नहीं गिनी गई है। यह भी उल्लेखनीय है। दागी और खराब छवि के उम्मीदवारों का बढ़ता हुआ ग्राफ भी दोनों चिन्ता का विषय है। चुनाव प्रचार के समय इसी वजह से भाषा का संयम नहीं रहा। विवादस्पद बातें की गई। मर्यादाओं को ताक पर रखा गया। इसी वजह से सदन में कार्यवाही बाधित भी होती है। सुशासन में दिक्कत आती है। सदन में सदस्यों के व्यवहार में गिरावट आती है। चुनाव आयोग, विधि आयोग और सुप्रीम कोर्ट के आदेशों अनुसार पार्टी में, राजनैतिक पार्टियों के सदस्यों, पदाधिकारियों, चुनाव में खड़े होने वाले उम्मीदवारों तथा चुने जाने वाले प्रतिनिधियों में दागी चेहरों को हटाने का कानूनी प्रावधान तुरन्त प्रभावी रूप से लगना चाहिए। अच्छे लोग आये, तभी अच्छा सुशासन होगा। अच्छा विकास होगा। सदन में अच्छे लोग आये। सेवा के लिए आने वाले लोग आये, घर भरने वाले नहीं।

चुनाव की प्रक्रिया में ई-वोटिंग को बढ़ाया जाये। चुनाव की सारी प्रक्रिया भी ऑनलाईन कर दिया जाये तो चुनाव का खर्चा घटेगा। चुनाव सरल और अधिक सारगर्भित हो सकेगा। चुनाव और उसके बाद सरकार के गठन में परिवारवाद भी, जातिवाद की तरह ही बढ़ कर बोला है। टिकट के बटवारें में भी प्रत्येक पार्टी में बेटे, बेटियों, दामादों का झगड़ा रहा। जीतने के बाद मंत्री पद भी परिवार की पृष्ठ भूमि से मिले न कि योग्यता के आधार पर। प्रजातन्त्र की आवश्यकता है-योग्यता निर्धारित और गुणवता आधारित निर्णय होने चाहिए। इस चुनाव में हुए प्रयासों से यह भी लग रहा है कि किसी अपराधी व्यक्ति को चुनाव लड़ने से अयोग्य घोषित करना काफी नहीं है। उनकी पार्टी की सदस्यता, पार्टी के कार्य संचालन, चुनाव में प्रचार करने की भी भूमिकाओं पर रोक लगनी चाहिए। हाल ही में सुप्रीम कोर्ट में चुनाव में अयोग्यता अवधि जन्म पर्यन्त करने के लिए केस डाला है। ऐसी व्यक्ति पार्टी और चुनाव प्रचार के कार्य से भी प्रतिबन्धित हो। सुप्रीम कोर्ट का निर्णय आने वाला है।

सभी पार्टियां विकास के मुद्दे पर, आरक्षण के मुद्दे पर बढ़-चढ़ कर मतदाताओं को भ्रमित कर रही थी। इससे बचने का उपाय करना चाहिए। प्रत्येक प्रतिनिधि के चुनाव क्षेत्र में विकास के कार्यक्रम की उद्घोषणा हो। पार्टी के चुनाव घोषणाओं पर अमल करना आवश्यक हो। अन्यथा पार्टी का रजिस्ट्रेशन रद्द हो और प्रतिनिधि को पद मुक्त करने के लिए प्रक्रिया उल्लेखित हो।

लोकतन्त्र में प्रत्येक प्रतिनिधि को, प्रत्येक सरकार को 51 प्रतिशत वोट शेयर होना चाहिए। अन्यथा उसे बहुमत प्राप्त प्रतिनिधि नहीं समझा जा सकता है। लालू जी की पार्टी को 18.4 प्रतिशत वोट मिला और उसके 80 उम्मीदवार जीते। भाजपा को 24.3 प्रतिशत फीसदी वोट मिले फिर भी सिर्फ 53 उम्मीदवार जीते। इस तरह लोकतन्त्र में विजय होने वाली सरकार ने 18-20 प्रतिशत वोट पर भी राज कर सकती है। यह कहाँ तक उचित है। बिहार चुनाव के विश्लेषण से यह तय है कि प्रत्येक चुनाव में धर्म और जाति के विषयों को निष्प्रभावी करना चाहिए। धनबल, बाहुबल का प्रयोग नियन्त्रित करें। स्टेट फंडिंग हो। चुनाव प्रक्रिया ऑन-लाईन और ई-वोटिंग से हो। 51 प्रतिशत वोट शेयर अनिवार्य हो। चुनाव आयोग, विधि आयोग, विभिन्न चुनाव सुधार, अध्ययन और सुप्रीम कोर्ट के आदेशों को तुरन्त लागू करे। आवश्यक कानूनी प्रावधान अविलम्ब किए जाये। अब तो कुछ करो। सजग नागरिक जागे। अब तो कुछ करवायें।

❑